चैत्र - बैसाख - ज्येष्ठ - आषाढ़ - श्रावण - भाद्रपद - अश्विन - कार्तिक - मार्गशीर्ष - पौष - माघ - फाल्गुन

Pre paid upto HP/48/SML (upto 31-12-2026) RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

भाद्रपद-आश्विन, युगाब्द 5127, सितम्बर 2025

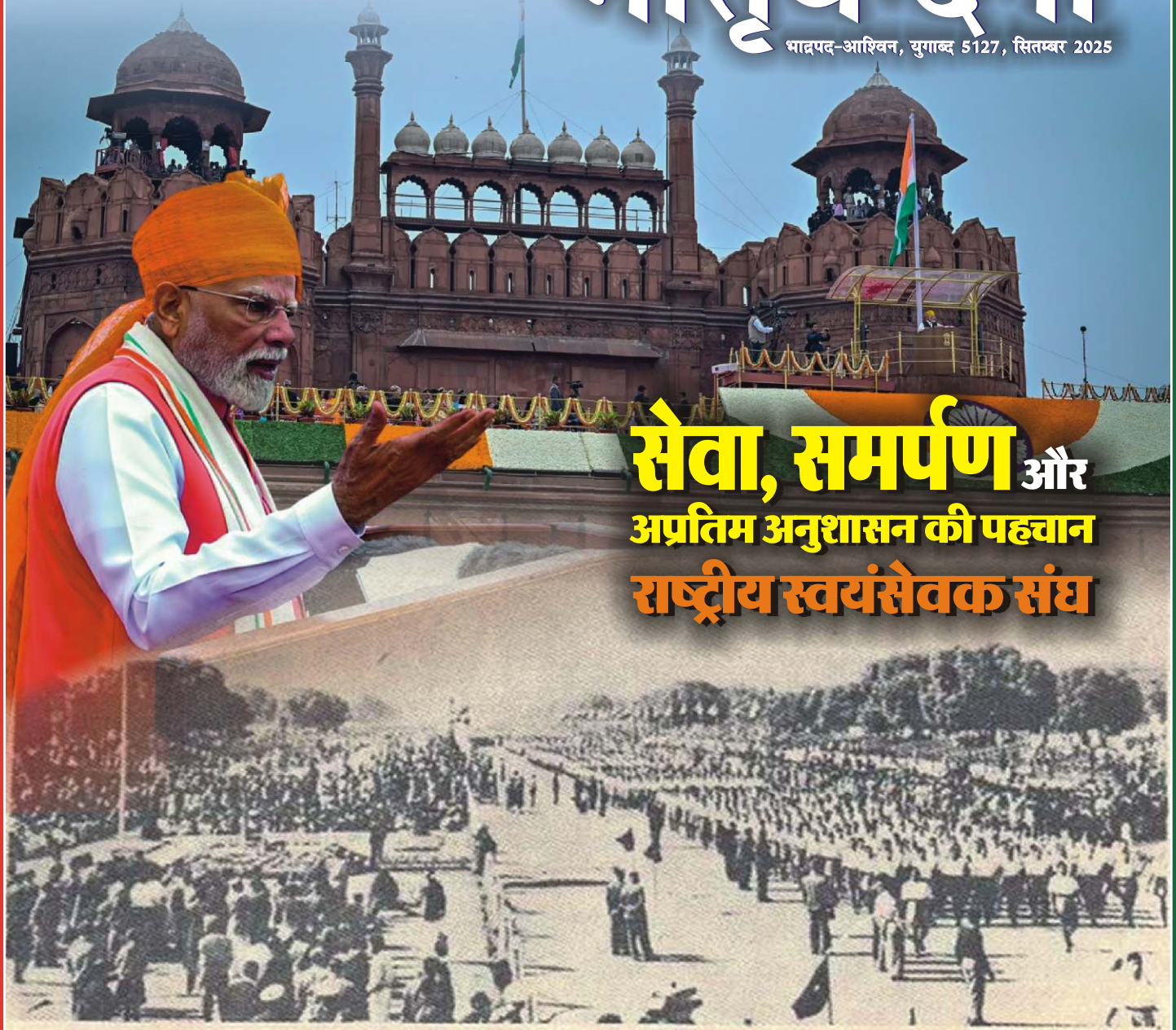

सेवा, समर्पण और अप्रतिम अनुशासन की पहचान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

3500-strong contingent of Swayamsevaks in uniform, with Band, forming a colourful part of the Republic Day Parade, Delhi, 1963.

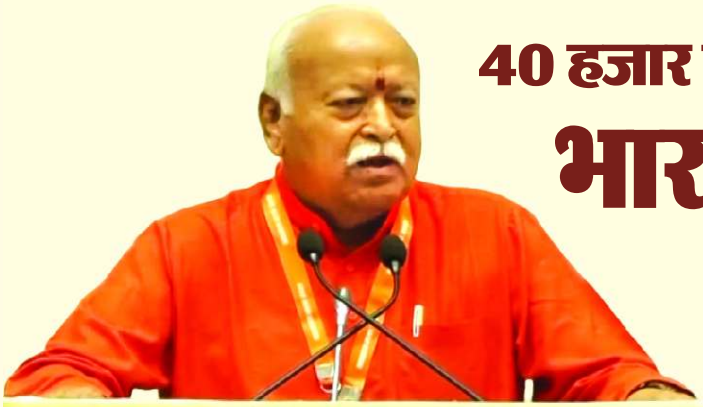

40 हजार वर्ष पूर्व से भारतीयों का डीएनए एक

भारत एक, भारत अखंड

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी यात्रा केवल समय की गिनती नहीं है, बल्कि एक विचार, एक संकल्प और एक साधना का परिणाम है। पूजनीय सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत जी ने विज्ञान भवन दिल्ली में तीन दिवसीय व्याख्यानमाला के पहले दिन 26 अगस्त 2025 को अपने उद्बोधन में स्पष्ट कहा कि संघ के बारे में बहुत चर्चाएँ होती हैं, परंतु उनमें प्रामाणिक जानकारी का अभाव है। संघ को समझने के लिए आवश्यक है कि उसे तथ्यों व अनुभवों की कसौटी पर देखा जाए, न कि केवल धारणाओं पर।

उन्होंने आगे कहा कि दुनिया में इतने देश हैं, विश्व पास आ गया है। यद्यपि विश्व का जीवन एक है, मानवता एक है, परंतु वह एक जैसी नहीं है। इस विविधता के अपने-अपने रंग हैं। संघ की निर्मिति का प्रयोजन भारत है, संघ के चलने का प्रयोजन भारत है, और संघ की सार्थकता भारत को विश्वगुरु बनाने में है। उन्होंने कहा कि डॉ. हेडगेवार जन्मजात देशभक्त थे। बचपन से ही यह चिंगारी उनके मन में थी। डॉ. साहब कलकत्ता गए, मेडिकल की पढ़ाई की और अनुशीलन समिति से संबंध भी स्थापित किया। त्रिलोक्यानाथ चक्रवर्ती, रासबिहारी बोस की पुस्तकों में उनका जिक्र आता है। उनका कोड नाम 'कोकेन' था। जो स्वयं शुद्ध चरित्र का हो, जिसका समाज से निरंतर संपर्क हो, जिस पर समाज विश्वास करता हो, जो समाज के लिए जीवन-मरण करने को तत्पर हो – ऐसा नायक चाहिए। जिसके जीवन से एक वातावरण बनता है। ऐसे नायकों का निर्माण होना चाहिए। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने स्पष्ट रूप से लिखा है। डॉ. हेडगेवार ने एक प्रयोग किया और उसके सफल होने के बाद चर्चा की। संघ का बीजारोपण वास्तव में कई वर्ष पहले हो चुका था, लेकिन 1925 की विजयादशमी के बाद उन्होंने इसकी औपचारिक घोषणा की। उन्होंने कहा कि हिंद स्वराज में गांधी जी ने लिखा है। अंग्रेजों के आने से बहुत पहले हमारा देश एक था। हमारे देश का अस्तित्व बहुत प्राचीन है। परिस्थिति बदलती है एकत्व नहीं बदलता है। उन्होंने कहा कि गुरुनानक देव जी की वाणी में स्पष्ट मिलता है-'खुरासान खसमाना किया, हिंदुस्तान डराया।' आगे बाबर के अत्याचारों का वर्णन करते हुए बताया कि उस समय न हिंदू महिलाओं का सम्मान सुरक्षित रहा, न मुस्लिम महिलाओं की अस्मत बची। भागवत जी ने कहा कि संघ की 100 वर्ष की यात्रा केवल संगठन की गाथा नहीं है, बल्कि यह उद्देश्य स्पष्ट करती है कि आर.एस.एस. क्यों प्रारंभ हुआ, कितनी कठिनाइयों और बाधाओं को स्वयंसेवकों ने सहते हुए इसे आगे बढ़ाया, और आज सौ वर्षों के बाद भी यह नए क्षितिजों की ओर क्यों देख रहा है। यदि इसका उत्तर एक वाक्य में दिया जाए तो वह यही है – संघ की प्रार्थना के अंत में हम प्रतिदिन कहते हैं, 'भारत माता की जय'। यही हमारा देश है, उसकी जय-जयकार होनी चाहिए और उसे विश्व में अग्रणी स्थान प्राप्त होना चाहिए।

उन्होंने एक और महत्वपूर्ण बात कही कि अपना स्वाभाविक धर्म क्या है? समन्वय - संघर्ष नहीं। 40,000 वर्ष पूर्व से भारत के लोगों का डीएनए एक है। हमारी संस्कृति एक है, मिलजुल कर रहने की। संघ से स्वयंसेवकों का संबंध अटूट है, जन्म-जन्मांतर का है। करना क्या है? संपूर्ण समाज का संगठन। संपूर्ण हिन्दू समाज का संगठन। हिन्दू कहने से यह अर्थ नहीं है कि हिन्दू वर्सेस ऑल, ऐसा बिल्कुल नहीं है। 'हिन्दू' का अर्थ है समावेशी। हमें कोई गुट नहीं बनाना है, सम्पूर्ण समाज का संगठन करना ही संघ का उद्देश्य है। हम कहते हैं प्रार्थना में - 'विजेत्री च नः संहता कार्यशक्ति'।

उन्होंने कहा कि गुरुजी से प्रेस कॉन्फ्रेंस में पूछा गया – हमारे गाँव में ईसाई, और मुसलमान नहीं हैं, तो हमारे यहाँ शाखा का क्या काम है? गुरुजी ने उत्तर दिया-अपने गाँव को छोड़ दो, अगर पूरी दुनिया में ईसाई और मुसलमान न होते, तब भी यदि हिन्दू इस अवस्था में होता, तो संघ जैसी शाखा की आवश्यकता थी। संघ किसी का विरोध नहीं संपूर्ण समाज का संगठन करता है, और ये 100 साल से कर रहा है। जब हम हिंदू राष्ट्र कहते हैं तो किसी को छोड़ रहे हैं ऐसा नहीं है। संघ किसी विरोध में और प्रतिक्रिया के लिए नहीं निकला है। किसी स्वयंसेवी संगठन का इतना कड़ा, कटु और लंबा विरोध नहीं हुआ, जितना संघ का हुआ। इस देश में हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध आदि-आदि आपस में संघर्ष नहीं करेंगे; इसी देश में जिएँगे, इसी देश में मरेंगे। संघ को स्वयंसेवक चलाएंगे, हम परावलंबी नहीं हैं। कार्यकर्ता, धन और आयाम की दृष्टि से संघ स्वावलंबी है।◆◆◆ **क्रमशः पृष्ठ 10-11 पर**

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

मातृवन्दना

वर्ष: 33 अंक : 09 हिन्दी मासिक, शिमला (हिमाचल प्रदेश),
भाद्रपद-आश्विन, कलियुगाब्द 5127, सितम्बर 2025

इस अंक में...

संपादकीय	राष्ट्र सेवा का शताब्दी वर्ष	5
चिन्तन	जियो तो कुछ होकर जियो	6
प्रेरक प्रसंग	जन सेवा ही सच्चा साधन है	7
आवरण	लाल किले से गूंजा आरएसएस का गौरव	8
	100 वर्ष की संघ यात्रा - व्याख्यानमाला	10
	भारतीय ज्ञान परंपरा के पुरोधा...	12
महिला जगत्	प्रमिला ताई जी प्रेरणादायी व्यक्तित्व	13
संगठनम्	सेवा भारती की कमान विनोद अग्रवाल	14
देवभूमि	दैविक मर्यादा का संरक्षण हमारी जिम्मेदारी	17
नवाचार	सेब की बर्फी ने देशभर में मचाई धूम	19
देश प्रदेश	धर्मांतरण का जाल	20
धर्म जागरण	भारतीय परम्परा व संस्कृति में तिलक	21
इतिहास	कम्बुज के निवासियों पर भारतीय प्रभाव	22
पुण्य स्मरण	इतिहास शिल्पी ठाकुर राम सिंह जी	23
दृष्टि	प्रेरणादायक है कानून व जंगल के पहरेदार	25
युवा पथ	मैं संघ परिवार से हूं, अपनी सेवाएं...	26
पंच परिवर्तन	हिमालय की वेदना...	27
	हिमाचल में पर्यावरण से जुड़ी चुनौतियां	28
समसामयिकी	शिक्षक दिवस : इतिहास परंपरा...	30
कृषि	कृषि और समृद्धि	31
काव्य जगत्	आनंद अनुभूति	32
स्वास्थ्य	मधुमेह और उसका उपचार...	33
प्रतिक्रिया	वोट चोरी का आरोप निराधार	34
बाल जगत्	गुस्सा करना बुरी बात	35

परामर्श
डॉ. किस्मत कुमार
श्री चन्द्र प्रकाश
श्री प्रताप समयाल
श्री मोतीलाल

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

सह सम्पादक
डॉ. कर्म सिंह

सम्पादक मण्डल
डॉ. उमेश मौदगिल, डॉ. जय कर्ण,
डॉ. सपना चंदेल, हितेन्द्र शर्मा

आवरण व अक्षर संयोजन
राजेश शर्मा

वितरण प्रमुख
नरेन्द्र कुमार

प्रकाशक / मुद्रक
कमल सिंह सेन

कार्यालय
मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र. 171 004
दूरभाष : 0177 - 2836990
व्हाट्स ऐप : 76500 00990
ई-मेल : matrivandanashimla@gmail.com

मासिक शुल्क	₹ 15
वार्षिक शुल्क	₹150
आजीवन शुल्क	₹1500

वैधानिक सूचना :
पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

अमृत वचन

महान लक्ष्य के लिए किया गया कोई
भी बलिदान व्यर्थ नहीं जाता है
-----गणेश दामोदर सावरकर

पाठकीय...

महोदय,

हिमाचल प्रदेश को बचाना है तो किसी को तो आगे आना ही होगा। हिमाचल को अगर आज नहीं बचाया गया तो वह दिन दूर नहीं जब इसका अस्तित्व ही पूरी तरह से मिटकर इतिहास में मात्र एक कहानी बनकर रह जाएगा। अभी भी कुछ भी देर नहीं हुई है हिमाचल को बचाने के लिए हम सभी को मिलकर आगे आकर इसकी तन-मन और धन से रक्षा करने में अभी से ही जुट जाने की सख्त आवश्यकता है।

सदियों पूर्व प्रदेश में जिस पुरानी शैली के घर बनाए जाते थे सरकार को उसी शैली के घरों का निर्माण करने की आवश्यकता है। पुरानी शैली के घर जैसे पहले बनाए जाते थे घर निर्माण के दौरान छोटे-छोटे पत्थर और मिट्टी तथा लकड़ी के शानदार अढ़ाई मंजिले शहरों और गाँवों में मात्र डेढ़ मंजिल से ज्यादा ऊँचे न हों। सदियों पूर्व भी तो बुजुर्गों ने घर बनाए थे और उन घरों में परिवार के सभी सदस्य शान्तिपूर्वक रहने से आपस में अच्छा मेल-मिलाप भी रहता था। आजकल गाँवों में भी बन रहे सीमेंट के घर सुरक्षित ही नहीं है एक तो वे घर ढलानदार ही नहीं होते हैं वहीं दूसरी ओर सरिया और कंकरीट डालने से बजन में बढ़ौतरी होने से भूकम्प आदि के छोटे से झटके से पल भर में ही धराशायी हो जाते हैं। इसलिए 'हिमाचल को बचाओ' एक नई पहल के साथ इस कार्य को अंजाम देने की आवश्यकता है। ज्यादा से ज्यादा पेड़ खुद भी लगाएं और वन विभाग से भी आग्रह किया जाए कि पेड़ लगाए। पहाड़ों को काटकर नुक्सान ही होगा। इसके साथ नदियों को भी बीच से खाली कर काफी गहरा करना पड़ेगा क्योंकि इनमें जो मलवा बह कर आया है उससे नदियों का पानी नीचे के वजाय ऊपर आ गया है। जिस कारण नदियों का पानी किनारों को काटता हुआ व मिट्टी को कमजोर करता हुआ अपने साथ जो भी उसके किनारे में है उसे अपने साथ बहा कर ले जा रहा है और नदियों का तटीयकरण करना भी अति आवश्यक है। सदियों पूर्व भी बाढ़ें आती थी और क्रेटवायर के डंगे लगते थे। नदियों के साथ जब से डंगे सरिये और कंक्रीट के साथ देने शुरू किए गए हैं तब से ही भारी मात्रा में तबाही ज्यादा ही हो रही है। क्योंकि जब एक सरिया हिलेगा तो दूसरा सरिया उससे जुड़ा होने के चलते वह भी अपने आप ही हिल जाएगा और पूरे का पूरा डंगा जहां तक जुड़ा है वहां तक क्षतिग्रस्त हो जाएगा। कुल्लू जिला के पतलीकूहल में स्थित फ्रूट की दुकानों का हाल सभी के सामने हैं और रायसन में भी यही हाल हुआ है। नदियों का बहाव सीधा कैसे किया जाए उसके उपाय मात्र खोजना ही नहीं बल्कि सरकार को उस पर कार्य करने की भी अति आवश्यकता है।

खुशी राम ठाकुर, लक्कड़ बाज़ार, डाक. बरोट, जिला मंडी हि.प्र.

चोर मचाए शोर

भारत की आजादी का संघर्ष मातृभूमि, संस्कृति, शिक्षा और परंपराओं की रक्षा के लिए था, परंतु स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस शासनकाल में शिक्षा और राजनीति की दिशा इस संकल्प से भटक गई। गुरुकुल व्यवस्था और भारतीय आदर्शों को दरकिनार करके विदेशी मानसिकता पर आधारित शिक्षा पद्धति को बढ़ावा मिला। इतिहास की पुस्तकों में हमारे महान आदर्शों की जगह आक्रांताओं को प्रमुखता दी गई। राजनीति में भी एक ही परिवार को सर्वोपरि मानने का वातावरण बनाया गया और अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की नीति के कारण भारतीय संस्कृति और राष्ट्रवाद पीछे धकेल दिए गए।

आज नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने इस ढांचे को चुनौती दी है और छिपे हुए काले सच को उजागर करना शुरू किया है। यही कारण है कि विपक्ष और विशेषकर कांग्रेस सत्ता से दूर रहकर अराजकता और भ्रम फैलाने में लगी हुई है। संसद से लेकर सड़क तक शोर-शराबा मचाकर 'वोट चोरी' जैसे मुद्दों को हवा दी जा रही है। परंतु चुनाव आयोग ने संविधान की परिधि में स्पष्ट किया है कि मतदाता सूची का निर्माण और संशोधन एक पारदर्शी प्रक्रिया के तहत होता है, और इसका राजनीतिक रंग देना उचित नहीं है। दरअसल, बूथ कैप्चरिंग और हिंसा की राजनीति का इतिहास खुद विपक्ष से जुड़ा है। ऐसे में 'वोट चोरी' का शोर मचाना केवल ध्यान भटकाने की राजनीति है। इसे सही अर्थों में कहा जा सकता है—'चोर मचाए शोर'

दुर्गादत्त भारद्वाज, अर्की, जिला सोलन, हि.प्र.

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 **7650000990**

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को शारदीय नवरात्रों की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस सितम्बर 2025

गौरी पूजन	1 सितम्बर
शिक्षक दिवस	5 सितम्बर
अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस	8 सितम्बर
विश्वकर्मा पूजा	17 सितम्बर
शारदीय नवरात्रे	22 सितम्बर
विश्व पर्यटन दिवस	27 सितम्बर

डॉ. दयानंद शर्मा
सम्पादक, मातृवन्दना

'स्व' जागृत करता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

संपादकीय

'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत' यह उक्ति सर्वदा सार्थक मानी गई है। उदाहरणत: जब कोई व्यक्ति अपने समक्ष खड़े व्यक्ति को स्वयं से श्रेष्ठ समझने की गलती कर बैठता है तो स्वाभाविक रूप से वह आत्महीनता का शिकार बन जाता है। यही आत्महीनता उसके विवेक और सामर्थ्य को क्षीण कर देती है। वह अतीत के गौरव और अपनी अस्मिता का विस्मरण कर बैठता है। यही बात समाज और राष्ट्र पर भी चरितार्थ होती है। सदियों पूर्व विश्वगुरु की पहचान बनाने वाला भारत भी गुलामी की बेड़ियों में क्या बंधा, अपनी सारी अस्मिता खो बैठा। संगठन की शक्ति को अनदेखा कर जब भारतीय राज्य दुर्दान्त मुस्लिम आक्रान्ताओं से परास्त हो गये और उनकी अधीनता उन्होंने स्वीकार कर ली, तब उन क्रूर शासकों के अत्याचारों से पीड़ित भारतीय जनमानस अपनी किञ्चित् शेष बची अस्मिता का परित्याग कर भाग्य भरोसे बैठ गया। इस अन्तराल में कई ऐसे वीर नृपति सेनापति हुए जिन्होंने अपने आत्म गौरव को अक्षुण्ण बनाये रखा और इन क्रूर शासकों की अधीनता स्वीकार नहीं की। मुगलों की सत्ता शिथिल होते ही अंग्रेजों ने अपने बल से पुन: इस देश को पराधीन कर डाला। इस अन्तराल में भी भारत का जनमानस अंग्रेजों को अपने से श्रेष्ठ समझने की भूल कर बैठा। वर्ष 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में भारतीयों ने स्वतंत्रता हेतु एक अलख तो जगाई किन्तु सफलता हाथ न आई, अपितु अंग्रेजों का दमन चक्र और अधिक बढ़ गया।

देश की स्वतंत्रता हेतु अग्रणी भूमिका निभाने वाले कांग्रेस दल ने असहयोग और अहिंसा का मार्ग अपनाया था। क्रान्तिकारी देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे रहे थे। सुभाष चन्द्र बोस की हिन्दसेना भी आजादी के लिए संघर्षरत थी। वीर सावरकर जैसे क्रान्तिकारी सैल्यूलर जेल में बड़ी निर्ममता से प्रताड़ित किए जा रहे थे किन्तु कोई एक दूसरे का सहयोगी नहीं बन पा रहा था। इन परिस्थितियों के चलते डॉ. हेडगेवार का मन उद्वेलित था। उनका चिंतन था कि कैसे यहाँ बहुसंख्यक समाज को पुनर्जागृत किया जाए। वह हिन्दू समाज जो अपने आत्मगौरव एवं अस्मिता को विस्मृत कर चुका है और स्वधर्म, स्वसंस्कृति, स्वदेश, स्वाभिमान और स्वाधिकार के प्रति उदासीन हो चुका है, उसे कैसे जगाया जाये। उन्होंने यह विचार किया कि यह तभी सम्भव है, जब उसके स्व को जगाया जायेगा। स्वतन्त्रता का समुचित लाभ हम तभी प्राप्त कर सकेंगे। इस कार्य के लिए एक सशक्त संगठन की आवश्यकता होगी। इसी आशय से डॉ. हेडगेवार ने 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी और आज यही संगठन विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक संगठन बन चुका है। इसे विश्वस्तर पर पहुँचने में संघ के प्रचारकों की अग्रणी भूमिका है। अन्तर्मन के आह्वान पर स्वराष्ट्र और समाज के निमित्त स्वयं को समर्पित करने वाले प्रचारकों पर यदि दृष्टिपात किया जाये तो स्वयं अनुभूति हो जायेगी कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ किस महान उद्देश्य को संजोये हुए आगे बढ़ रहा है। संघ की नित्य शाखा में अवश्य जाकर देखिए, जहाँ शारीरिक स्फूर्ति और अंतस् की ऊर्जा को जागृत कराने का अभ्यास दिखता है। मातृभूमि से सच्चे प्रेम और नि:स्वार्थ भाव से समाज सेवा की सीख दी जाती है। भारत माता का गौरव गान कर अपनी अस्मिता की पहचान करायी जाती है। योग-ज्ञान-विज्ञान से स्वयंसेवकों को परिचित कराया जाता है। बंदूकों से नहीं, लाठियों से आत्मरक्षा के गुर सिखाये जाते हैं किंतु साथ ही देश के दुश्मनों की गोलियों का सामना करने के लिए फौलादी सीने भी तैयार किए जाते हैं।

भारत को विश्वपटल पर एक सर्वश्रेष्ठ देश बनाने की दिशा में जिस सच्ची लग्न व निष्ठा से देश का शीर्ष नेतृत्व प्रयासरत है, उसी दिशा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी समर्पण भाव से अपनी सहभागिता निभा रहा है। यही कारण है कि प्रधानमंत्री मोदी ने स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य पर लालकिले की प्राचीर से देश को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूरि-भूरि प्रशंसा की। वास्तव में संघ के स्वयंसेवक एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण लेकर समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी सक्रियता बढ़ाकर देश को उच्च शिखर पर पहुंचाने के लिए सतत् प्रयत्नशील है। 35 स्वायत एवं स्वतन्त्र संगठनों के माध्यम से संघ के स्वयंसेवक अपने-अपने क्षेत्रों में कार्यरत हैं। देश में कहीं भी कोई भी आपदा अथवा संकट हो, संघ के स्वयंसेवक सबसे आगे आकर तन-मन-धन से सहायता करने में जुट जाते हैं।

वर्तमान में स्वयं को सेक्यूलर कहलाने वाले विपक्षी दलों और नेताओं ने भारत में अल्पसंख्यकों को असुरक्षित सिद्ध करने का अभियान चलाया हुआ है। तुष्टिकरण की नीति अपना कर उनके वोट को हासिल करना ही उनका मकसद है। अल्पसंख्यक का अर्थ भारत में अब मुस्लमान हो गया है। कट्टरपंथी तत्त्व मुस्लिम विधायकों और सांसदों को इसी लाइन पर सदन में मत व्यक्त करने का आदेश देते हैं। वास्तव में यह समुदाय राष्ट्रीयता को अधिमान न देते हुए स्वयं को अन्तर्राष्ट्रीय मुस्लिम समाज का ही सदस्य स्वीकार करते हैं। अतएव सभी विपक्षी दल संगठित होकर संघ को बदनाम करने की साजिश रच रहे हैं। अब वास्तविकता यह है कि बहुसंख्यक समाज में संघ के माध्यम से ऐसे लोगों की कमी नहीं जो देश भक्त हैं, अनुशासित एवं चरित्रवान् हैं तथा नि:स्वार्थ भाव से सेवा समाज सेवा में तत्पर हैं। संघ की सौ वर्ष की यात्रा का ही यह सुपरिणाम है।

जियो तो कुछ होकर जियो

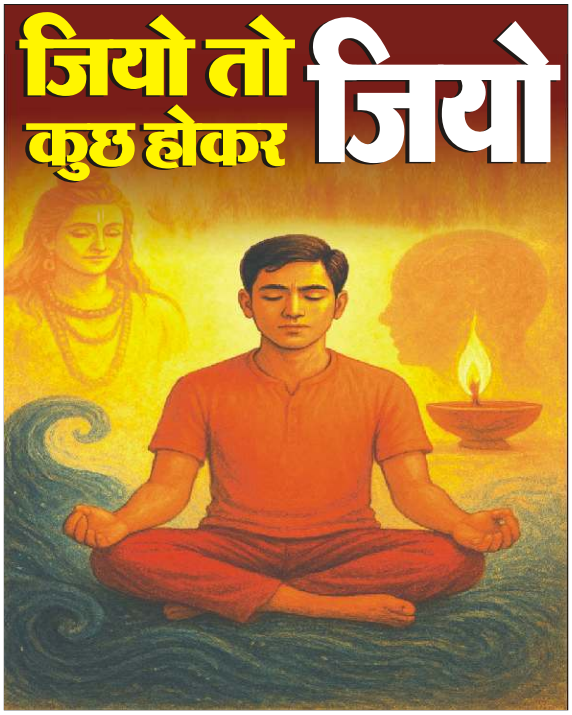

सत्-चित्-आनन्दस्वरूप महान् आत्मा के पुत्र होते हुए ईश्वर-सदृश अनन्त शक्तियों के स्वामी बनकर भी तुम निस्तेज और अशक्त होओगे, पाप तथा अज्ञान में पड़कर परवशता का अनुभव करते रहोगे और अपने-आपको हीन, नीच, पराधीन मानकर आत्मा का हनन कर दोगे- यह तुम्हारे निर्माणकर्ता का इष्ट न था।

तुम्हारा मन डगमगाते जल की तरह चंचल है; वह कभी इधर तो कभी उधर सदैव बहता रहता है। यदि उसमें उत्साह की उत्तेजना हो तो वह महान् कृत्य सम्पन्न कर सकता है। यदि महत्त्वाकांक्षा की अग्नि सदा प्रज्वलित रखी जाये तो मानसिक विचाररूपी जल इच्छारूपी वाष्प में परिवर्तित हो जाता है-जिससे बड़े-बड़े कार्य सुलभ हो जाते हैं। अपने उद्देश्यों को देखो। उनको सत्य की तुला पर तौलो। क्या वे पूरे उतरते हैं? क्या तुम अपनी महत्त्वाकांक्षाओं के प्रति खरे हो? क्या तुम उस आदर्श से संतुष्ट हो? तुम्हारी क्या-क्या प्रेरणाएँ हैं?

अनेक व्यक्ति थोड़ा-सा ही बढ़कर समझते हैं कि उन्नति की इति-श्री हो गयी। और ऊपर उठने की गुंजाइश नहीं है, हमने जो उपलब्ध कर लिया, यथेष्ट है। महत्त्वाकांक्षा में संतोषवृत्ति से उत्साहकी हानि होती है।

यदि तुम अपने उत्साह को लूला-लँगड़ा करके अग्रसर होओगे तो तुम्हारी संकल्प-शक्ति (Power of determination) भी निर्बल हो जायगी; फिर तुम्हारे प्रयत्नों (Efforts)-में दृढ़ता की न्यूनता रहेगी। जिन पुष्ट विचारों की हमारे अन्त:करण में प्रबल सत्ता अंकित होती है, उन्हीं विचारों के अनुसार हृदय तथा मस्तिष्क भी जाग्रत् होते हैं; कालान्तर में मन एवं शरीर की स्थिति भी वैसी ही हो जाती है। आत्मज्ञान के दिव्य सूर्य को प्रकाशित करने से मस्तिष्क मानसिक दासता से मुक्त होता है। मनका प्राण आत्मा है। इसमें प्रवेश करने से संशय, भ्रम, भय-भ्रान्ति के जाल से हमारा मन मुक्त हो जाता है।

अपना निश्चय दृढ़ कीजिये

पुस्तकों के पठन-पाठनमात्र से निश्चय नहीं होता। दूसरों के कहने-सुनने से, उपदेशों या सम्मतियों से भी कुछ नहीं होगा। निश्चय का बल अन्त:करण से ही प्राप्त होता है। उसकी प्राप्ति के निमित्त कटिबद्ध होकर आत्मा का सहारा टटोलना चाहिये। वृत्तियाँ अन्तर्मुखी हों। मन बार-बार अनैच्छिक विषयों, प्रलोभनों की ओर आकृष्ट न हो। अस्थिर मन सब विषयों में चक्कर काटता रहेगा, लक्ष्य से विचलित करेगा तथा महत्त्वपूर्ण चिन्तन के संस्कार न जमने देगा।

निश्चय करो कि मन को अपने इच्छित ध्येय में ही केन्द्रीभूत रखोगे। चारों ओर से घेरकर निश्चयात्मक इच्छाशक्ति को अपने लक्ष्य की सिद्धि में स्थिर करोगे। सब बाधाएँ परिपुष्ट उत्तेजित इच्छाशक्ति के सम्मुख नतमस्तक हो जाती हैं। कुछ प्रतिकूल विचार बार-बार तुम्हारे मनपर चोट मारते हैं, तुम्हें अस्त-व्यस्त कर देते हैं। इन जहरीले विचारों को सावधानी से बाहर निकालो। इस कूड़े-करकट को निकाल देना ही श्रेयस्कर है। अपनी स्मृतिपटल से इन अपवित्र विचारों की प्रतिच्छाया सर्वदा के लिये निकाल दो। तुम्हारा जो प्रधान लक्ष्य है, उसी को मानसिक नेत्रों के सम्मुख रखो। आग्रहपूर्वक वृत्ति स्थिर करनी चाहिये। मन को एक काल में केवल एक ही उद्देश्य पर केन्द्रीभूत रखो। नेत्र मूँदकर मानस-नेत्रों को उसी में स्थिर करो ।

तुम्हें जो इष्ट है, जैसा तुम वास्तव में होना चाहते हो, उसको स्पष्ट लिखकर एक स्थान पर टाँग लो। नित्य दृढ़तापूर्वक उस पर मानसिक प्रवाह को खोलते रहो। एक निश्चित समय पर उस स्थान में प्रवेश करो, दृढ़तापूर्वक अपने इष्ट की ओर देखते रहो; कुछ काल पश्चात् नेत्र मूँद लो। अन्त:करण के प्रत्येक स्तर में इसी इष्ट का दर्शन करो। तुम्हारे रक्त में यही इष्ट उष्णता प्रदान करे। तुम्हारा अणु-अणु इसकी सिद्धि के हेतु विह्वल हो उठे। जितनी ही यह दिव्य विह्वलता उपार्जित करोगे, उतना ही उत्तम है। स्मरण रहे, यदि तुम्हारी श्रद्धा न्यून होगी, तुम इसको मिथ्या या अनित्य समझोगे तो कदापि कुछ प्राप्त न कर सकोगे।◆◆◆

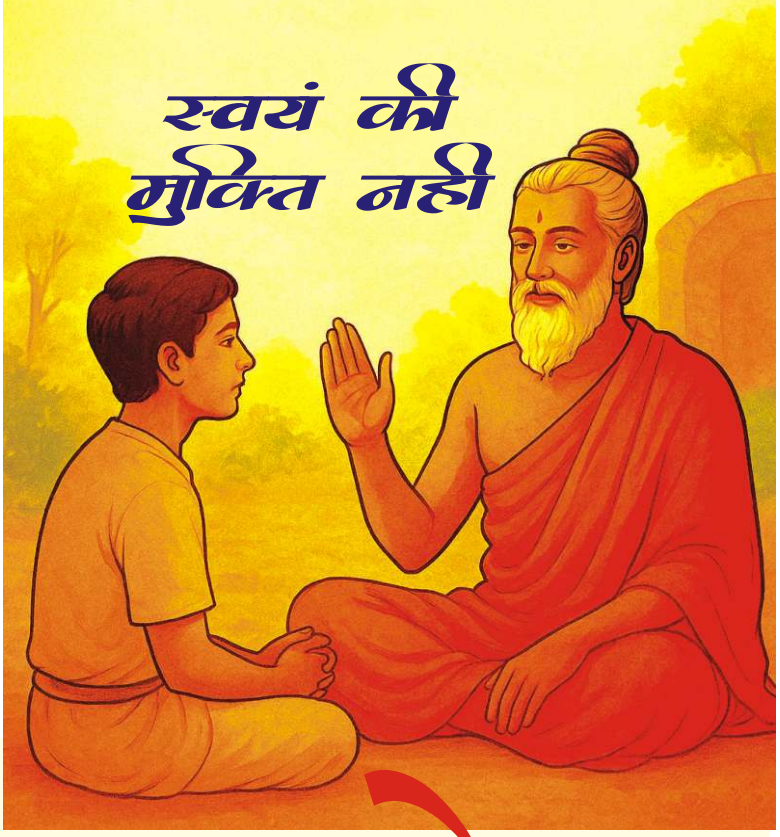

जनसेवा ही सच्चा साधन है

स्वामी जी का हृदय तो शिक्षित अविवाहित नवयुवकों की ओर लगा था, जिन्हें वे अपने भावी कार्य के हेतु प्रशिक्षित करना चाहते थे। वे अपने ज्वलन्त उत्साह का थोड़ा अंश उन लोगों में भी रोप देना चाहते थे। वे उन्हें अपनी 'मनुष्य बनाने वाली शिक्षा' के प्रचारक बनाना चाहते थे। स्वामीजी ने भारतीय युवकों की शारीरिक दुर्बलता की समालोचना की, उनके बाल विवाह की निन्दा की तथा उनमें आत्मश्रद्धा एवं अपने राष्ट्रीय आदर्शों में विश्वास के अभाव पर उन्हें आड़े हाथों लिया।

एक दिन एक युवक स्वामीजी से मिलने को आया और आध्यात्मिक जीवन में प्रगति न कर पाने पर खेद व्यक्त करने लगा। उसने एक धर्मप्रचारक की सलाह पर मूर्तियों की पूजा की, फिर एक दूसरे शिक्षक के निर्देशानुसार मन को शून्य करने का प्रयास किया, परन्तु कोई फल न मिला।

युवक ने कहा – 'महाराज, मैं अब भी एक कोठरी में, दरवाजा बन्द कर, जब तक बन पड़ता है, बैठा रहता हूँ, किन्तु शान्ति तो किसी भी तरह नहीं मिल रही है। क्या आप मेरा मार्गदर्शन करेंगे ?'

स्वामीजी स्नेहयुक्त स्वर में कहने लगे– 'बेटा, यदि तुम मेरी बात मानो तो सबसे पहले तुम्हें अपनी कोठरी का दरवाजा खुला रखना होगा। तुम्हारे आस-पड़ोस में सैकड़ों गरीब और बेसहारे लोग रहते हैं, उनकी तुम यथासाध्य सेवा करो। जो रोगी हैं उनके नये औषधि तथा पथ्य का प्रबन्ध करो और उनकी सेवा-शुश्रूषा करो। जो भूखे हैं, उनके लिये खाने की व्यवस्था करो। जो अज्ञानी हैं, उन्हें पढ़ाओ। मेरा परामर्श यही है कि तुम यथासाध्य लोगों की सेवा करो इससे तुम्हारे मन को अवश्य शान्ति मिलेगी।'

एक अन्य दिन एक कॉलेज के जाने माने प्राध्यापक, श्रीरामकृष्ण के एक शिष्य भी थे, स्वामीजी से बोले – 'देखो, तुम जो दया, परोपकार और जीव सेवा आदि की बातें करते हो, वे तो माया के राज्य की बातें हैं। जब वेदान्त में मानव का चरम लक्ष्य मुक्ति लाभ और माया बन्धन का विच्छेद है, तो फिर उन सब माया के व्यापारों में लिप्त होकर लोगों को दया, परोपकार आदि विषयों का उपदेश देने से क्या लाभ ?'

स्वामीजी ने उत्तर दिया 'मुक्ति भी क्या माया के अन्तर्गत नहीं है ? आत्मा तो नित्यमुक्त है, फिर उसकी मुक्ति के लिये चेष्टा क्यों ?' एक अन्य अवसर पर स्वामीजी ने कहा – 'साधकावस्था में जब मैं भारत के अनेक स्थानों का भ्रमण कर रहा था, उस समय मैंने कितनी ही निर्जन गुफाओं में अकेले बैठकर कितना समय बिताया है, मुक्ति नहीं मिली ऐसा सोचकर कितनी ही बार प्रायोपवेशन द्वारा देह त्याग देने का भी संकल्प किया है, कितना ध्यान, कितना साधन-भजन किया है ! किन्तु अब मुक्तिलाभ के लिये वह आग्रह नहीं रहा। अब तो लगता है कि जब तक पृथ्वी पर भी मनुष्य बन्धन में है, तब तक मुझे अपनी मुक्ति की कोई आवश्यकता नहीं !'◆◆◆

राष्ट्रसेवा का शतक

लाल किले से गूंजा आरएसएस का गौरवगान

राजेश शर्मा

15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस का दिन केवल राष्ट्रीय गौरव का अवसर नहीं होता, बल्कि यह हमारे इतिहास, संस्कृति और त्याग की परंपरा का भी स्मरण कराता है। इसी परंपरा में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 79वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की सराहना की, तो वह केवल एक औपचारिक प्रशंसा नहीं थी, बल्कि एक सदी से अधिक समय से राष्ट्र को समर्पित एक तपस्वी संगठन की जीवनगाथा को मान्यता देने जैसा था। प्रधानमंत्री ने संघ को 'दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन' बताते हुए यह स्पष्ट किया कि भारत की आत्मा में जो सेवाभाव, जो राष्ट्रनिष्ठा और जो सांस्कृतिक चेतना आज दिखाई देती है, उसमें संघ का योगदान अविस्मरणीय है।

संघ की स्थापना : एक सांस्कृतिक संकल्प

27 सितंबर 1925, विजयादशमी का दिन। नागपुर की पावन भूमि पर डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने उस संगठन की नींव रखी, जो आने वाले समय में भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता का आधार बनेगा। उस दौर में विदेशी शासन भारत की आत्मा को तोड़ने का प्रयास कर रहा था – हमारे इतिहास, भाषा, संस्कृति और गौरव को दबाने का षड्यंत्र चल रहा था। ऐसे समय में डॉ. हेडगेवार ने स्वामी विवेकानंद की ओजस्वी वाणी, लोकमान्य तिलक की निर्भीकता और महात्मा गांधी के आत्मबल से प्रेरणा लेकर यह बीड़ा उठाया कि हिंदू समाज को संगठित कर राष्ट्र को आत्मगौरव की राह पर अग्रसर करना ही सच्चा स्वराज होगा।

संघ ने राजनीति नहीं, बल्कि समाजजीवन में समरसता, अनुशासन और सेवा की धारा प्रवाहित की। इसकी शाखाएँ केवल खेल या प्रार्थना का स्थान नहीं, बल्कि 'राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की प्रयोगशालाएँ' बनीं। यहाँ स्वयंसेवक प्रतिदिन एकत्र होकर शारीरिक व्यायाम, देशभक्ति गीत और राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा करते हैं। भगवा ध्वज के समक्ष सामूहिक प्रार्थना केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि त्याग, बलिदान और मातृभूमि के प्रति समर्पण की प्रतिज्ञा है।

सेवा का पथ : समाज के अंतिम व्यक्ति तक

संघ की पहचान केवल विचारों तक सीमित नहीं रही। यह संगठन हर उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ समाज पीड़ा से कराह रहा था। आपदा हो या अकाल, भूकंप हो या बाढ़—संघ स्वयंसेवक सबसे आगे खड़े दिखाई देते हैं। भूखों को भोजन, रोगियों को उपचार

और बेसहारों को सहारा देने की परंपरा ने इसे सेवा का पर्याय बना दिया है।

आज सेवा भारती के माध्यम से संघ और उसके स्वयंसेवक 1,25,000 से अधिक सेवा प्रकल्प चला रहे हैं। झुग्गी-बस्तियों में शिक्षा का दीप जलाना हो, आदिवासी अंचलों में स्वास्थ्य सेवा पहुँचाना हो या वंचित वर्गों को आत्मनिर्भर बनाना हो—हर क्षेत्र में संघ ने नि:स्वार्थ सेवा की मिसाल कायम की है।

संघ :राष्ट्र की आत्मा की अभिव्यक्ति

...जब भारत स्वतंत्रता का 79वां उत्सव मना रहा है, तब संघ की शताब्दी यात्रा हमें यह संदेश देती है कि सच्चा राष्ट्रनिर्माण केवल राजनीतिक आज़ादी से नहीं, बल्कि समाज की एकता, संस्कृति के पुनर्जागरण और सेवा के संकल्प से संभव है। संघ केवल संगठन नहीं है। यह भारतीय आत्मा की जीवित अभिव्यक्ति है। यह उस संस्कृति का रक्षक है, जिसने दुनिया को वसुधैव कुटुम्बकम् का मंत्र दिया। यह उस राष्ट्रभाव का वाहक है, जिसने सदियों की गुलामी सहने के बाद भी अपना स्वाभिमान जीवित रखा। लाल किले से गूंजते प्रधानमंत्री के शब्द हमें स्मरण कराते हैं कि संघ की शाखाओं में गाया जाने वाला हर गीत, की गई हर प्रार्थना और दी गई हर सेवा – भारत के उज्ज्वल भविष्य की नींव है।

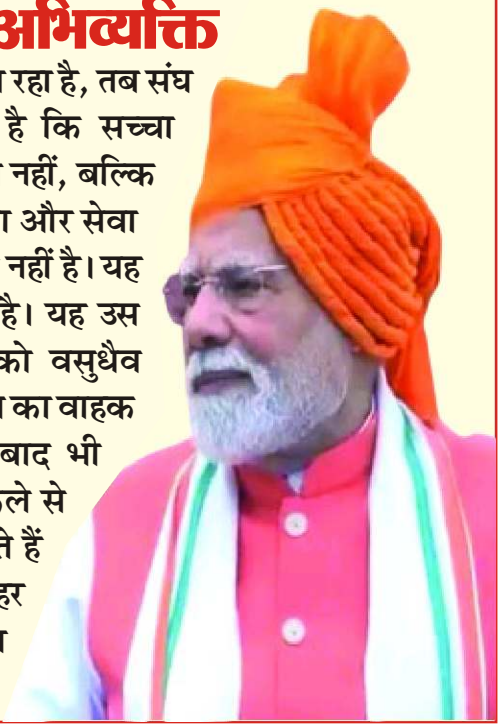

संघ के प्रेरित संगठन : राष्ट्रनिर्माण की धारा

संघ के संस्कारों से अनेक संगठन निकले, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव लाए।

- अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) ने शिक्षा जगत में राष्ट्रभक्ति और चरित्र निर्माण का वातावरण बनाया।
- भारतीय मजदूर संघ (बीएमएस) ने श्रमिकों की आवाज़ को राष्ट्रीय विकास से जोड़ा।
- विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) ने हिंदू समाज की एकता और सांस्कृतिक जागरण का अभियान चलाया।
- विद्या भारती ने लाखों बच्चों को सस्ती और मूल्याधारित शिक्षा प्रदान कर नई पीढ़ी गढ़ी।
- वनवासी कल्याण आश्रम ने आदिवासी समाज के विकास और उनकी संस्कृति की रक्षा का बीड़ा उठाया।

इसके अलावा कई इन विविध संगठन है, जिनकी कार्यशैली का मूल मंत्र 'सेवा ही संगठन का प्राण' रहा है।

राष्ट्रीय आंदोलनों में योगदान : संघ ने कई ऐतिहासिक क्षणों में समाज को दिशा दी। चाहे राम जन्मभूमि आंदोलन हो या कश्मीर बचाओ अभियान – संघ ने राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा के लिए समाज को जागृत किया। साथ ही, जातिगत भेदभाव, छुआछूत और धर्मांतरण जैसी बुराइयों के खिलाफ सक्रियता से काम किया। संघ ने सामाजिक समरसता को अपने जीवन का ध्येय बनाया।

वैश्विक दृष्टिकोण : वसुधैव कुटुम्बकम्

संघ का दर्शन केवल भारत तक सीमित नहीं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना इसे संपूर्ण मानवता का संगठन बनाती है। संघ का हिंदू जीवनदर्शन-प्रकृति के साथ सामंजस्य, आत्मसंयम और करुणा पर आधारित है। आज जब साम्यवाद और पूंजीवाद जैसी पश्चिमी विचारधाराएँ संकट में हैं, तब संघ का यह मार्ग दुनिया के लिए टिकाऊ विकल्प के रूप में उभर रहा है। पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक एकता और आध्यात्मिक चेतना के सूत्र इसे वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी प्रासंगिक बनाते हैं।

लाल किले की गूंज : राष्ट्र का सम्मान : जब प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले से कहा कि संघ 'दुनिया का सबसे बड़ा एनजीओ है' तो वह केवल शब्द नहीं थे। यह उन असंख्य स्वयंसेवकों के तप और त्याग का सम्मान था, जो गुमनाम रहते हुए राष्ट्र की सेवा में निरंतर लगे हैं। यह उस सांस्कृतिक चेतना का स्वीकार था, जिसने भारत को अपनी आत्मा से जोड़कर रखा है। ये है आज के भारत की तस्वीर – **वन्दे मातरम्, भारत माता की जय**◆◆◆

100 वर्ष की संघ यात्रा
नए क्षितिज
(व्याख्यानमाला - द्वितीय दिवस)

शुद्ध सात्विक प्रेम और समाजनिष्ठा पर आधारित है संघ का कार्य

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने विज्ञान भवन दिल्ली में आयोजित तीन दिवसीय व्याख्यानमाला के द्वितीय दिवस 27 अगस्त को कहा कि जीवन और समाज में संतुलन ही सच्चा धर्म है। यही संतुलन हमें अतिवाद से बचाता है और यही आज की दुनिया की सबसे बड़ी आवश्यकता है। भारत की परंपरा इसे मध्यम मार्ग कहती है। उन्होंने बल देकर कहा कि समाज परिवर्तन की शुरुआत घर से होनी चाहिए और इसके लिए संघ ने पंच परिवर्तन का मार्ग सुझाया है - कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, स्व-बोध (स्वदेशी) और नागरिक कर्तव्यों का पालन।

संघ का कार्य और स्वयंसेवक : डॉ. भागवत जी ने कहा कि संघ का कार्य किसी स्वार्थ, पद या लाभ पर नहीं टिका है। स्वयंसेवक समाज के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य करते हैं। यहाँ कोई इंसेंटिव नहीं है, बल्कि डिसइंसेंटिव अधिक हैं, फिर भी सेवा का आनंद ही उन्हें निरंतर प्रेरणा देता है। सज्जनों से मैत्री करना, दुष्टों की उपेक्षा करना, अच्छे कार्य पर आनंद प्रकट करना और दुर्जनों पर भी करुणा करना - यही संघ का मूल्य है।

हिन्दुत्व का स्वरूप : उन्होंने कहा कि हिन्दुत्व कोई संकीर्ण विचारधारा नहीं, बल्कि सत्य, प्रेम और अपनत्व की अनुभूति है। हमारे ऋषि-मुनियों ने जीवन को केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जीने का संदेश दिया। यही दृष्टि भारत को विश्व का पथप्रदर्शक बनाती है।

विश्व की चुनौतियाँ : आज दुनिया कट्टरता, कलह और उपभोगवाद की ओर बढ़ रही है। पिछले साढ़े तीन सौ वर्षों में भौतिकवाद और जड़वाद ने मानव जीवन की भद्रता को क्षीण किया है। गांधी जी द्वारा बताए सात सामाजिक पाप - श्रम बिना काम, विवेक बिना आनंद, चरित्र बिना ज्ञान, नैतिकता बिना व्यापार, मानवता बिना विज्ञान, बलिदान बिना धर्म और सिद्धांत बिना राजनीति - इस असंतुलन का कारण बने हैं।

धर्म का वास्तविक अर्थ : डॉ. भागवत जी ने कहा कि धर्म केवल पूजा-पाठ या कर्मकांड नहीं है। यह सभी धर्मों और पंथों से ऊपर वह मार्ग है, जो हमें संतुलन सिखाता है। धर्म का अर्थ है मर्यादा के साथ जीना और विविधता को स्वीकार करना। यही विश्व शांति का आधार है और यही भारत का योगदान विश्व के सामने होना चाहिए।

भारत का आचरण : भारत ने हमेशा संयम और उदारता का परिचय दिया है। जिन्होंने हमें नुकसान पहुँचाया, संकट में उनकी भी सहायता की। अहंकार से राष्ट्रों में शत्रुता जन्म लेती है, किंतु भारत अहंकार से ऊपर खड़ा रहा है। यही आचरण हमें विश्व का उदाहरण बनाता है।

भविष्य की दिशा : उन्होंने कहा कि संघ का लक्ष्य है कि समाज के हर वर्ग, हर क्षेत्र और हर स्तर तक उसका कार्य पहुँचे। सज्जन शक्तियों को जोड़कर चरित्र निर्माण और राष्ट्रभक्ति का कार्य स्वयं समाज करे। इसके लिए निरंतर संवाद, दुर्बल वर्गों की सहायता और समाज में समरसता की आवश्यकता है।

आर्थिक दृष्टि : आर्थिक विकास पर उन्होंने जोर दिया कि भारत को आत्मनिर्भरता और स्वदेशी के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी ध्यान में रखते हुए एक नया विकास मॉडल प्रस्तुत करना होगा। पड़ोसी देशों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि नदियाँ, पहाड़ और लोग वही हैं; केवल नक्शे पर लकीरें खींची गई हैं। पंथ अलग हो सकते हैं, पर संस्कारों में मतभेद नहीं है।

पंच परिवर्तन और नागरिक कर्तव्य : उन्होंने कहा कि परिवर्तन की शुरुआत अपने घर से करनी होगी। कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, स्व-बोध और नागरिक कर्तव्यों का पालन - यही पंच परिवर्तन हैं। पर्व-त्योहार पर पारंपरिक वेशभूषा अपनाना, स्वभाषा में हस्ताक्षर करना, और स्थानीय उत्पादों का सम्मानपूर्वक उपयोग करना, इन छोटे-छोटे कार्यों से भी देशहित साधा जा सकता है। उन्होंने चेतावनी दी कि उकसावे की स्थिति में कभी अवैध कार्य न करें, न टायर जलाएँ और न पत्थर उठाएँ। संविधान और नियमों का पालन ही सच्चा देशभक्ति का मार्ग है। उन्होंने कहा कि हंसते-हंसते हमारे पूर्वज फाँसी पर चढ़ गए, लेकिन आज आवश्यकता है कि हम 24 घंटे देश के लिए जीएँ। 'हर हाल में संविधान और नियमों का पालन करना चाहिए। अंत में सरसंघचालक जी ने कहा कि **'संघ क्रेडिट बुक में नहीं आना चाहता। संघ चाहता है कि भारत ऐसी छलांग लगाए कि उसका कायापलट तो हो ही, पूरे विश्व में सुख और शांति कायम हो जाए।'**

100 वर्ष की संघ यात्रा
नए क्षितिज

(व्याख्यानमाला - तृतीय दिवस)
जिज्ञासा समाधान

परम्परा से जुड़ें तकनीक से आगे बढ़ें शिक्षा से संस्कारित हों

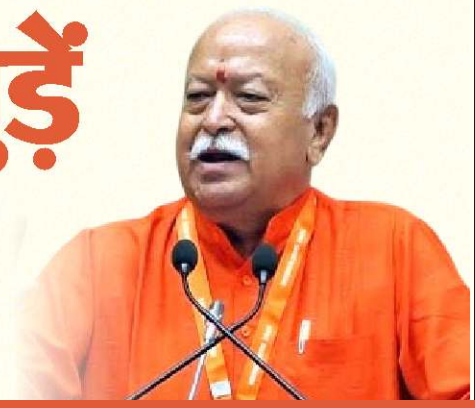

भागवत जी ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी भरना नहीं, बल्कि व्यक्ति को संस्कारित करना है। शिक्षा को भारतीय परंपरा और मूल्यों से जोड़कर आत्मगौरव से परिपूर्ण बनाना ही आज की आवश्यकता है। नई शिक्षा नीति में पंचकोषीय शिक्षा (शारीरिक, प्राणिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास) इसी सोच का परिणाम है। तकनीक का उपयोग भी तभी सार्थक होगा जब वह मानवीय मूल्यों और समाजहित से जुड़ा हो। संघ का यह सतत प्रयास है कि प्राचीन से आधुनिक तक की ज्ञान परंपरा जीवित रहे और भारत अपने वास्तविक स्वरूप में विश्व के सम्मुख स्थापित हो।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित तीन दिवसीय व्याख्यानमाला का समापन 28 अगस्त 2025 को 'जिज्ञासा समाधान' सत्र के साथ हुआ। अंतिम दिवस पर सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने विभिन्न विषयों पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दिया। इस कार्यक्रम के लिए कुल 218 जिज्ञासाएं और 148 सुझाव प्राप्त हुए, जिन्हें 21 विषयगत समूहों में विभाजित कर उनके भाव और मर्म को संरक्षित रखते हुए सरसंघचालक जी के समक्ष रखा गया।

शिक्षा और तकनीक पर विचार : डॉ. भागवत जी ने स्पष्ट किया कि तकनीक और आधुनिकता का शिक्षा से कोई विरोध नहीं है। जैसे-जैसे मानव का ज्ञान बढ़ता है, नई तकनीकें आती रहती हैं और उनका मूल उद्देश्य समाज का कल्याण ही होता है। किंतु यह आवश्यक है कि तकनीक पर नियंत्रण मनुष्य के पास रहे, न कि तकनीक मनुष्य को नियंत्रित करने लगे। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा—'पहले लाठी पहलवान घुमाता था, बाद में लाठी पहलवान को घुमाने लगती थी। आज मोबाइल को हम सुनते थे, अब मोबाइल हमें सुनाने लगा है।' इसलिए शिक्षा केवल जानकारी देने तक सीमित न होकर, व्यक्ति को विवेकशील और संस्कारित बनाने वाली होनी चाहिए।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य : भागवत जी ने कहा कि मात्र साक्षरता शिक्षा नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य ऐसा संस्कार प्रदान करना है जिससे मनुष्य विष को भी औषधि के रूप में ढूंढ सके। भारत की परंपरागत शिक्षा पद्धति को विदेशी आक्रांताओं ने समाप्त कर दिया और शासन चलाने के लिए ऐसी प्रणाली लागू की, जिसमें गुलामी की मानसिकता निहित थी। स्वतंत्र भारत में शिक्षा का उद्देश्य शासन चलाना नहीं, बल्कि नागरिकों में आत्मगौरव और स्वाभिमान जागृत करना होना चाहिए। नई शिक्षा नीति इसी दिशा में प्रयासरत है, जिसमें भारतीय संस्कृति और परंपरा के तत्व शामिल किए जा रहे हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा और संघ : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का एक नित्यकर्म एकात्मता स्तोत्रम् का गायन है। इसमें भगवान, मातृभूमि, नदियों, ऋषियों और वैज्ञानिक परंपरा का स्मरण किया जाता है। कपिल, कणाद, चरक, सुश्रुत, आर्यभट, नागार्जुन से लेकर जगदीशचंद्र बसु और सी.वी. रामन जैसे आधुनिक वैज्ञानिकों तक सभी का परिचय संघ के प्रशिक्षण वर्गों में दिया जाता है। यह परंपरा सतत चल रही है और समय के साथ अद्यतन भी होती रहती है।

भाषा और एकता का प्रश्न : भागवत जी ने कहा कि भारत की सभी भाषाएं राष्ट्रभाषाएं हैं, परंतु संपर्क और व्यवहार के लिए एक भारतीय भाषा होनी चाहिए, कोई विदेशी भाषा नहीं। उन्होंने भाषा को लेकर विवाद न करने की सलाह दी।

अन्य महत्वपूर्ण सवालों के जवाब

डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि आक्रमणकारियों के नाम पर शहरों और मार्गों का नामकरण उचित नहीं है, किंतु वीर अब्दुल हमीद और डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे राष्ट्रनायकों के नाम पर अवश्य होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि बच्चों की संख्या तीन तक सीमित रहनी चाहिए, ताकि जनसंख्या नियंत्रित रहे 'आधुनिक जनसंख्या विज्ञान कहता है कि जब किसी समाज की जनसंख्या (प्रजनन दर) 2.1 से नीचे जाती है, तो वह समाज दुनिया से धीरे-धीरे नष्ट होने लगता है।

उन्होंने कहा कि भारत के विभाजन और उसमें संघ की भूमिका को समझने के लिए वे. शेषाद्रि जी की पुस्तक Tragic Story of Partition का अध्ययन उपयोगी रहेगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा के पुरोधा राष्ट्रऋषि डॉ. मोहन भागवत

हितेन्द्र शर्मा
लेखक एवं साहित्यकार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत जी केवल संगठन के प्रमुख ही नहीं बल्कि उस भारत की चेतना के संवाहक हैं, जो राष्ट्र को एक भूभाग नहीं अपितु 'मातृभूमि' के रूप में देखता है। उनका जीवंत व्यक्तित्व एक ऐसा विचार है, जो परंपरा की जड़ों में गहराई तक रचा-बसा है परंतु समकालीन सामाजिक यथार्थ से भी गूंजता है। उनका नेतृत्व संघ को विचारधारा की स्थिरता और समय की गति, इन दोनों के मध्य एक ऐसा सेतु बनाता है जो हिंदू समाज एवं विश्व समुदाय का प्रेरणास्रोत है। चंद्रपुर की एक साधारण मराठी ब्राह्मण पृष्ठभूमि से आने वाले मोहन भागवत जी ने जब पशुचिकित्सा में स्नातक की डिग्री पूरी करने के बाद संघ के प्रचारक जीवन को चुना, तब यह स्पष्ट हो गया था कि उनके लिए जीवन का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, राष्ट्रधर्म के निर्वहन के लिए अपना सर्वस्व समर्पण का संकल्प है। यह त्याग और तपस्या का वह मार्ग है, जिस पर चलकर वे 2009 में संघ के छठे सरसंघचालक बने।

भागवत जी का नेतृत्व एवं मार्गदर्शन संघ के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ है। उन्होंने संगठन को केवल शाखाओं और अनुशासन की परिधि में सीमित न रखकर उसे एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया है। उन्होंने अपनी तपश्चर्या से यह स्थापित किया कि हिंदुत्व कोई धार्मिक कट्टरता नहीं बल्कि भारत की समावेशी और विविधतापूर्ण जीवनदृष्टि है। यही कारण है कि उन्होंने संघ की परंपराओं में रहते हुए ज्वलंत प्रश्नों तथा समकालीन राष्ट्रीय एवं वैश्विक चुनौतियों पर भी स्पष्ट और मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। फिर चाहे वह समलैंगिक समुदाय के प्रति सहानुभूति हो, महिलाओं की भूमिका को लेकर प्रगतिशील दृष्टिकोण हो या पर्यावरण संरक्षण और वैज्ञानिक सोच को लेकर स्पष्ट दृष्टि। उनका यह विचार कि शारीरिक व मानसिक क्षमता में क्षीणता आने पर नेतृत्व में स्थानांतरण जरूरी है। यह केवल एक संगठनात्मक नियम नहीं बल्कि एक नैतिक सोच भी है। एक ऐसा दृष्टिकोण, जो वर्तमान भारतीय नेतृत्व संस्कृति में बहुत दुर्लभ है। भागवत जी का यह आग्रह बताता है कि उनका जीवन सत्ता नहीं, बल्कि सेवा और संकल्प की उदात्त भावना से ओत-प्रोत एवं प्रेरित है।

अब जबकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वर्ष 2025 में अपने स्थापना शताब्दी वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है, ऐसे में मोहन भागवत जी का नेतृत्व और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इसी क्रम में 26 अगस्त 2025 से आरंभ होने वाली तीन दिवसीय विशेष व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन, संघ की वैचारिक यात्रा के एक नया अध्याय का स्वर्णिम इतिहास रचने जा रहा है। इस व्याख्यानमाला में भागवत जी उन पांच प्रमुख परिवर्तनों पर अपना वैचारिक मार्गदर्शन प्रदान करेंगे, जिनकी अनुपालना एवं अनुशासन से संघ और स्वयंसेवक समाज में गहरे और सार्थक प्रभाव छोड़ सकते हैं।

इस बार यह आयोजन केवल दिल्ली तक सीमित न रहकर देश के कोने-कोने तक पहुंचेगा। मुंबई, बेंगलुरु, कोलकाता जैसे महानगरों में भी इसे आयोजित किया जाएगा।संघ इस बार व्याख्यान मंच पर केवल अपने विचारों को ही नहीं रखेगा बल्कि समाज के हर वर्ग से संवाद करने की कोशिश भी होगी। विपक्षी दलों, अल्पसंख्यकों, धार्मिक नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और अर्थशास्त्रियों तथा विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित करके यह बताने का प्रयास किया जाएगा कि संघ की विचारधारा अलग नहीं बल्कि भारत की आत्मा में रची-बसी है। संघ के प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर जी के अनुसार इस पहल के पीछे उद्देश्य यह है कि राष्ट्र निर्माण केवल सत्ता परिवर्तन से नहीं बल्कि विचारों के संवाद और सामाजिक सहभागिता से संभव है। मोहन भागवत जी का नेतृत्व इन सभी पहलुओं का केंद्र है। वे केवल भाषण नहीं देते बल्कि अपने आचरण से एक जीवन दृष्टि को अभिव्यक्त करते हैं। वे क्रांति का शोर नहीं करते परंतु उनके विचारों की गहराई और उनकी सादगी में एक मौन क्रांति की गूंज स्पष्ट सुनाई देती है।इस दृष्टि से मोहन भागवत जी केवल संघ प्रमुख नहीं, एक 'राष्ट्रऋषि' हैं जिनकी वाणी में ओज एवं समर्पण है।◆◆◆

प्रमिला ताई जी
प्रेरक व्यक्तित्व

राष्ट्र सेविका समिति की पूर्व प्रमुख संचालिका प्रमिला ताईजी के प्रेरणादायी जीवन और राष्ट्र सेवा के योगदान को याद करते हुए श्रद्धांजलि।

-डॉ. रूपा रावल

सन 1995 की बात है। मुझे कहा गया था कि राष्ट्र सेविका समिति के कुछ अधिकारी आ रहे हैं उनको लेकर राजकोट से सोमनाथ जाना है। किसी भी अधिकारी के साथ प्रवास का मेरे लिए पहला अनुभव था। आयु भी छोटी ही थी। मन में घबराहट भी थी। अधिकारी आए तो देखा कि लगभग 65-70 की आयु की दादी मां जैसी दिखने वाली दुबली पतली महिला थीं। उस दिन राजकोट में दिनभर अलग-अलग कार्यक्रमों के बाद रात्रि प्रवास कर के हम सोमनाथ पहुंचे थे। प्रवास कुछ खास आरमदायक नहीं था।

राज्य परिवहन की बस में हम गए थे। मैं तो थककर चूर हो गयी थी। लेकिन साथ के अधिकारी युवा की सी स्फूर्ति से महाराष्ट्र की पारम्परिक साड़ी (नौवारी) पहनकर नहा-धो कर तैयार थीं। उस वर्ष देवी अहिल्याबाई की 200वीं पुण्यतिथि मनाई जा रही थी। हमें उसी उपलक्ष्य में सोमनाथ में देवी अहिल्याबाई होल्कर द्वारा निर्मित मंदिर में रूद्र पूजा के लिए जाना था। पूजा अधिकारी के हाथों से ही संपन्न होनेवाली थी। पूजा से पहले जब पंडितजी ने संकल्प दोहराने को कहा, तब उन अधिकारी ने स्थिर और गंभीर स्वर में कहा 'आत्मनो मोक्षार्थ जगत हिताय च' वे शब्द आज भी मेरे कानों में गूंज रहे हैं, लेकिन जिनके मुख से पहली बार इतने बड़े संकल्प को बिना समझे ही सुना था, अब वो अधिकारी यानि श्रद्धेय प्रमिला ताई जी हमारे बीच नहीं रहीं।

जिसकी अनुपम धैर्य धारणा, जिससे मिलती स्वयं प्रेरणा, मृत में भी जो अमृत भरता, वही समझ लो सात्विक कर्त्ता, गीत की इन पंक्तियों को सार्थक करते हुए हुए अपने जीवन दीप से चहुं ओर प्रकाश बिखेर के प्रमिला ताई जी अनंत में विलीन हो गईं। उनको शत शत नमन। सादर सस्नेह श्रद्धांजलि!...

सतत चिंतनशील थीं प्रमिला ताई जी

कर्मठता यदि मनुष्य का स्वरूप ले सकती है तो वह निश्चित ही प्रमिला ताई जी के रूप में पहचानी जायेगी। सतत वाचन, नई चीजें सीखने के लिए सदा उत्साही, कर्तव्य कठोर, लेकिन मां जैसी ममतामयी, समिति कार्य के बारे में सतत चिंतनशील, कार्यकर्त्ता को जोड़कर रखने वाली प्रमिला ताई जी केगुणों के बारे में कितना भी लिखा तो कम ही होगा। अभी गत सप्ताह 25 जुलाई को दूसरे दिन कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में एक पोस्टर बनाकर उनको देखने के लिए भेजा था।

बचपन से ही राष्ट्र सेविका समिति से जुड़ गई थीं ताई

केवल पांच मिनट में प्रतिक्रिया भी आ गयी और एक शब्द को बदलने की सूचना मिली। आयु के 96वें वर्ष में भी इतनी क्रियाशीलता शायद ही किसी में देखने को मिलती है। महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले में जन्मीं प्रमिला ताई जी बचपन में ही राष्ट्र सेविका समिति से जुड़ी हुई थीं। समिति की संस्थापिका वन्दनीया लक्ष्मीबाई केलकर (मौसीजी) के सानिध्य में उन्होंने संगठन की रीति-नीति सीखी और उसे आत्मसात कर लिया। स्नातक होकर बीएड पूर्ण कर उन्होंने नागपुर के सी.पी. एण्ड बरार उच्च माध्यमिक विद्यालय में दो वर्ष अध्यापन कार्य किया। बाद में उन्होंने सीनियर ऑडिटर की सरकारी नौकरी भी की, किन्तु समिति के कार्य के लिए सेवानिवृत्ति से 12 वर्ष पूर्व ही स्वैच्छिक अवकाश ले लिया। राष्ट्र सेविका समिति में विविध दयित्वों का वहन करके 2012 में प्रमुख संचालिका का पदभार शांताक्का जी को देकर हम सभी की मार्गदर्शक की भूमिका में वे जीवन के अंत तक रहीं।

न्यूजर्सी की मिली थी मानद नागरिकता

समिति कार्य के लिए विदेशों में भी उनका प्रवास रहता था। इसी प्रवास के दौरान अमेरिका में न्यूजर्सी शहर के महापौर द्वारा इन्हें 'मानद नागरिकता' प्रदान की गई थी। मौसी जी के जन्मशताब्दी वर्ष में उन्होंने 266 दिनों की भारत परिक्रमा, मौसी जी की जीवन-प्रदर्शनी के साथ निजी वाहनों से की। कन्याकुमारी से लेकर नेपाल, जम्मू-कश्मीर एवं जूनागढ़ से लेकर इम्फाल तक इस 28,000 किलोमीटर लम्बी कठिन यात्रा में उन्होंने लगभग 109 सार्वजनिक भाषण दिए, 105 शाखाओं में रहीं, लगभग 141 परिसंवाद, भेंटवार्ता और पत्रकार वार्ता की। उन्होंने समूचे देश की मातृशक्ति को उत्साह और ऊर्जा से भर दिया। ◆◆◆

भारतीय संस्कृति ही राष्ट्र निर्माण की आधारशिला : डॉ. मनमोहन वैद्य

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के अभ्युदय अध्ययन मंडल इकाई द्वारा 'भारत की भारतीय अवधारणा' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य, डॉ. मनमोहन वैद्य मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय प्रांत संघचालक प्रोफेसर वीर सिंह रांगड़ा जी ने की। संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मुख्य वक्ता डॉ. मनमोहन वैद्य जी ने अपने संबोधन में कहा कि अंग्रेजों ने भाषा और मौलिकता के आधार पर भारत के अनेक भागों को विभाजित किया और इसी कारण 'इंडिया' तथा 'भारत' जैसे दो नाम प्रचलित हुए। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों बाद भी यह प्रश्न खड़ा है कि राष्ट्र की उन्नति हेतु हमें किस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

डॉ. वैद्य ने एक यूरोपीय लेखक की पुस्तक 'Who are We' का उल्लेख करते हुए कहा कि उसमें यह प्रश्न उठाया गया है कि 'हम कौन हैं, हमारी जड़ें कहाँ हैं और हमारे पूर्वज कौन हैं।' उन्होंने पी. मुन्शी जी द्वारा लिखित Pilgrimage to Freedom का भी उल्लेख किया, जिसमें प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था और उद्योगों पर प्रकाश डाला गया है।

भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि 'एकम् सत् विप्रा: बहुधा वदन्ति' अर्थात् सत्य एक है, परंतु ज्ञानीजन उसे अनेक रूपों में बताते हैं । भारत की आत्मा ही उसकी 'विविधता में एकता' है, प्रत्येक व्यक्ति के भीतर ईश्वर (आत्मा) का निवास है।

डॉ. वैद्य ने स्पष्ट किया कि हिंदू कोई संकीर्ण धर्म नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक मार्ग अर्थात् "Way of Life" है। उन्होंने 2014 में Sunday Guardian में प्रकाशित एक लेख का उल्लेख करते हुए कहा कि नई सरकार के आगमन के साथ भारतीय संस्कृति के अनुरूप शासन-प्रणाली का आरंभ हुआ, जो लंबे समय से समाज में चल रहे कार्यों का परिणाम है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने यहाँ शासन के लिए Indian Penal Code (IPC) बनाया गया था, जिसका उद्देश्य भारतीयों को दंडित करना था। किंतु अब भारतीय न्याय संहिता (BNS) लागू की गई है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को न्याय दिलाना है।◆◆◆

'त्रिगर्त क्षेत्र व कटोच राजवंश का इतिहास' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी सम्पन्न

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान, नेरी (हमीरपुर) और संस्कृत विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धौलाधार परिसर-1, धर्मशाला में 'त्रिगर्त क्षेत्र व कटोच राजवंश का इतिहास' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गौतम शर्मा व्यथित ने की। प्रमुख वक्ता, प्रसिद्ध इतिहासकार और पूर्व आचार्य प्रो. नारायण सिंह राव ने कहा कि त्रिगर्त रियासत की स्थापना महाभारत काल से भी पूर्व मानी जाती है, इसलिए कटोच राजवंश भारतीय इतिहास के सबसे प्राचीन राजवंशों में से एक है। उन्होंने इसे भारतीय इतिहास-लेखन की पुनर्संरचना में महत्वपूर्ण योगदान के रूप में बताया। शोध संस्थान नेरी के निदेशक डॉ. चेतराम गर्ग ने त्रिगर्त राज्य और कटोच राजवंश के ऐतिहासिक स्रोतों के रूप में पुराण, उपनिषद और संस्कृत साहित्य का उल्लेख करते हुए इतिहास लेखन में भारतीय दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया।

अध्यक्ष डॉ. गौतम शर्मा व्यथित ने कहा कि इतिहास लेखन हमेशा प्रामाणिक तथ्यों पर आधारित होना चाहिए और यह विचार करना आवश्यक है कि लेखन क्यों, कैसे और किस उद्देश्य से किया जा रहा है। संगोष्ठी में लगभग 20 विद्वान उपस्थित रहे। ◆◆◆

भारत विकास परिषद् ने आपदा प्रभावितों को भेजी रैडी टू ईट फूड की नौ टन की खेप

भारत विकास परिषद बद्दी शाखा ने भेजा राहत सामग्री से भरा दूसरा ट्रक मंडी जिला के आपदा प्रभावितों को मिलेगा लाभ भारत विकास परिषद हिमाचल प्रदेश की बद्दी इकाई ने एक बार फिर मानव सेवा की मिसाल कायम करते हुए मंडी जिला के आपदा प्रभावित क्षेत्रों के लिए राहत सामग्री से भरा दूसरा ट्रक रवाना किया। परिषद के अध्यक्ष रमन कौशल ने बताया कि वह लगातार थुनाग, जंजैहली व अन्य प्रभावित क्षेत्रों से अपडेट ले रहे हैं ताकि ज़रूरतमंदों तक समय पर मदद पहुंच सके। प्रदेश सेवा प्रमुख दीप कुमार आर्य ने बताया कि भारत विकास परिषद बीते चार वर्षों में लगभग एक करोड़ रुपये की राहत सामग्री आपदाग्रस्त लोगों तक पहुंचा चुकी है। उन्होंने बताया कि इस वर्ष आपदा राहत के लिए बद्दी शाखा की ओर से अब तक चार ट्रक सामग्री भेजे जा चुके हैं। राहत सामग्री में संस्था की तरफ से रैडी टू ईट फूड की नौ टन की खेप भेजी गई है। ◆◆◆

वृक्ष हमारे जीवनदाता - स्वामी आर्यपुरूष

शिमला के गलेन क्षेत्र में फिनिक्स अकैडमी, आर्यावर्त इंस्टीट्यूट (तारा हॉल) और हिंद एजुकेशन (कालीबाड़ी) के संयुक्त तत्वावधान में एक भव्य वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता के संवर्धन और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने हेतु जन सहभागिता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से संपन्न हुआ। इस अवसर पर स्थानीय प्रजातियों के 100 पौधों का रोपण किया गया, जिनमें देवदार, बान और खानोर जैसे हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्वपूर्ण पौधे शामिल थे। मुख्य अतिथि स्वामी आर्यपुरुष जी महाराज ने वृक्षों को 'जीवनदाता' बताते हुए कहा कि उनका संरक्षण मानवता की सेवा के समान है। कार्यक्रम में स्थानीय समाजसेवियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों और आम नागरिकों ने सक्रिय भागीदारी निभाई। विशेष रूप से उज्जवल शर्मा, उधम गुलेरिया, अनुज पंत, ललित ठाकुर, भागेश, विरेंद्र शर्मा और विकास गोयल जैसे युवा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम की सफलता में अहम योगदान दिया। ◆◆◆

डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति एवं मातृवन्दना संस्थान द्वारा पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन

डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति एवं मातृवन्दना संस्थान शिमला की ओर से सोनू बंगला, शोघी के समीप वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर 43 सदस्यों ने सक्रिय भागीदारी निभाते हुए विभिन्न प्रजातियों के 100 से अधिक पौधे रोपे। कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष श्री अजय कुमार सूद विशेष रूप से उपस्थित रहे। पौधारोपण कार्यक्रम के बाद जिला शिमला पर्यावरण के सह प्रमुख श्रीमान प्यारचंद जी ने वृक्षारोपण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वृक्ष केवल धरती की शोभा नहीं, बल्कि जीवन के आधार स्तंभ हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए। उन्होंने कहा कि समिति एवं संस्थान प्रतिवर्ष सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रहते हैं और पर्यावरण संरक्षण हेतु पौधारोपण को निरंतर आगे बढ़ाते हैं। पौधारोपण कार्यक्रम में श्री गणेश दत्त, डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति के सचिव श्री नवीन चौहान, सहसचिव श्री कर्म सिंह, कोषाध्यक्ष श्री मुकुल सूद, मातृवन्दना पत्रिका प्रमुख डॉ. राजेश शर्मा, संस्थान के सचिव श्री उमेश मोदगिल, कोषाध्यक्ष श्री लेखराज, शिमला विभाग प्रमुख श्री कुलदीप कुमार शर्मा सहित अनेक पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे।

अखंड भारत दिवस पर हिमाचल में कार्यक्रम

अखंड भारत एक संस्कृति, एक संकल्प, एक राष्ट्र

अखंड भारत दिवस के उपलक्ष्य में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में अभ्युदय अध्ययन मंडल इकाई द्वारा एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रोफेसर वीर सिंह रांगड़ा जी तथा विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर ज्योति प्रकाश जी विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रांत प्रचारक श्रीमान संजय जी रहे, जिन्होंने अखंड भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक महत्व और वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अखंड भारत केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। यह एक ऐसा संकल्प है जो विविधताओं में एकता और राष्ट्रभक्ति की भावना को उजागर करता है। अध्यक्ष के रूप में नवीन चौहान जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया और अखंड भारत की संकल्पना को युवाओं तक पहुँचाने के महत्व पर जोर दिया। कार्यक्रम में छात्रों और अध्यापकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा विविध सांस्कृतिक और विचार-विमर्श सत्रों के माध्यम से राष्ट्र की एकता, अखंडता और सांस्कृतिक धरोहर पर विचार साझा किए।◆◆◆

अखंड भारतः इतिहास से सीख, संस्कृति में शक्ति, भविष्य में संकल्प

केंद्रीय विश्वविद्यालय, शाहपुर परिसर में महर्षि चरक अध्ययन मंडल के तत्वावधान में 'अखंड भारत संकल्प दिवस' का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के जंतु विज्ञान विभाग के सहायक आचार्य डॉ. राकेश ठाकुर ने की, जबकि मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हिमाचल प्रांत के प्रांत प्रचार प्रमुख श्री प्रताप साम्याल ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम की शुरुआत माँ भारती के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन से हुई। मुख्य वक्ता श्री साम्याल ने उपस्थित छात्रों और विद्वानों को भारत के सांस्कृतिक और भौगोलिक विस्तार का चित्र प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भारत केवल एक भूभाग नहीं, बल्कि संस्कृति, परंपरा और विचारों की वह धारा है जो सहस्त्रों वर्षों से प्रवाहित हो रही है। उन्होंने याद दिलाया कि हमारे महापुरुषों का अखंड भारत का स्वप्न स्वतंत्रता के साथ साकार होना चाहिए था, परंतु विभाजन ने इसे अधूरा छोड़ दिया।

उन्होंने 1929 के लाहौर अधिवेशन का उल्लेख करते हुए कहा कि यह दिवस केवल स्मृति दिवस नहीं, बल्कि यह संकल्प है कि हम अपने अखंड स्वरूप को न भूलें, इतिहास की भूलों से सीख लें और भविष्य में ऐसी परिस्थितियों को रोकें। वक्ताओं ने छात्रों से आग्रह किया कि वे इतिहास को केवल पढ़ें नहीं, बल्कि उससे जुड़ें और राष्ट्र के लिए सकारात्मक योगदान दें। अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन के साथ डॉ. राकेश ने मुख्य वक्ता का आभार जताया और छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों और गौरवशाली इतिहास के अध्ययन में सजग रहने का आग्रह किया।◆◆◆

दैविक मर्यादा का संरक्षण हमारी जिम्मेदारी

आचार्य शशांक कृष्ण कौशल जी

हिमाचल केवल बर्फीली चोटियों, हरी-भरी वादियों और स्वच्छ नदियों का प्रदेश नहीं, बल्कि यह देवभूमि है, जहाँ हर शिखर, हर घाटी और हर गाँव में देवी-देवताओं की अनूठी परंपराएँ बसी हैं। ये परंपराएँ सिर्फ धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि हमारे पूर्वजों की हजारों वर्षों की तपस्या,अनुभव और संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। लेकिन आज, आधुनिकता और सोशल मीडिया के शोर में, हम खुद इन परंपराओं की जड़ों को कमजोर कर रहे हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स पर सैकड़ों पेज देवताओं के नाम पर हैं, पर उनमें से बहुतों को न तो देवताओं का इतिहास पता है और न ही उनकी मर्यादा। देव नुष्ठानों और देऊखेल के दौरान युवा वर्ग सोशल मीडिया पर लाइक और व्यूज के लिए देवताओं की तुलना करते हैं, तथा एक की महिमा बढ़ाकर दूसरे को छोटा दिखाने की कोशिश करते हैं। यह हमारी संस्कृति नहीं, हमारी भूल है।

देव आवेश का प्रदर्शन, मर्यादा का हनन है

हमारे प्राचीन देवस्थानों में जब देवताओं के प्रतिनिधि गूर (दिंवा) पर देवता का आवेश आता है, तो वह क्षण अत्यंत पवित्र होता है। यह देव और भक्त के बीच का निजी संवाद है, जिसे कैमरे और लाइव स्ट्रीम पर दिखाना न केवल मर्यादा का उल्लंघन है, बल्कि अज्ञानी लोगों के लिए गलतफहमियों का कारण भी बनता है, जो हमारी परंपरा से परिचित नहीं हैं, वे कभी-कभी असम्मानजनक टिप्पणी भी कर देते हैं। दोष उनका नहीं । हमने ही दिव्य शक्ति को उजागर करने वाली परंपरा को सार्वजनिक तमाशा बना दिया है।

आज कई जगह, देवताओं के नाम पर अत्यधिक भौतिक मांगें रखी जाती हैं - शराब, मांस, या अन्य वस्तुएँ। परंपरा में इनका स्थान विशेष अवसरों तक सीमित है, पर आज यह नियम मिटते जा रहे हैं। देवता की असली प्रसन्नता घी, श्रृंगार या भव्य इमारतों में नहीं, बल्कि सच्ची श्रद्धा, यज्ञ, मंत्र-जाप और अनुष्ठानों तथा लोककल्याण में है।

वैदिक एवं पौराणिक इतिहास से जुड़े मंदिरों एवं तीर्थ स्थलों का विशेष महत्व है। यहां हिमाचल के हर क्षेत्र का भी अपना स्थान देता है। कुल देवता एवं ईष्ट देवताओं की भी मान्यता हैं। सर्वत्र जनसहयोग से अपने-अपने क्षेत्र में भव्य मंदिर बनाए जा रहे हैं। किन्तु भव्यता के साथ-साथ दिव्यता का होना जरूरी है। दिव्यता तभी संभव है जब मन में सच्ची श्रद्धा और शुचिता होगी, जब मंदिरों में यज्ञ, कीर्तन, तप एवं अनुष्ठान होंगे।

युवा पीढ़ी को सही राह दिखाने की जरूरत

दुर्भाग्य है कि आज देव-यात्राओं और मेलों में कुछ युवा नशे में लिप्त दिखते हैं। यह वह राह नहीं जिस पर हमारी परंपरा ने हमें चलाया। हमें गर्व होना चाहिए कि हम हिमाचल से हैं। एक ऐसी भूमि जहाँ देव परंपरा शास्त्रों से परे, अपनी अनूठी पहचान रखती है। हिमाचल के देवता खशी के मौके पर भक्तों के साथ नाचते हैं और आपदा के अवसर पर रक्षा करते हैं। जब प्रदेश में आपदा या कठिनाई आती है, तो देवता की समितियाँ आगे आकर लोगों का संबल बनती हैं। यही सच्चा धर्म है। मंदिरों को भव्य बनाने से अधिक, दिव्य बनाना आवश्यक है।

आइए, देव मर्यादाओं को सोशल मीडिया के प्रदर्शन से बचाने का प्रयास करें। परंपराओं के वास्तविक स्वरूप को जीवित रखें। यज्ञ, मंत्र-जाप और अनुष्ठानों को पुनर्जीवित करें। युवाओं को संस्कृति से जोड़े, नशे से नहीं। हमारे पहाड़ों की पहचान सिर्फ उनकी सुंदरता नहीं , बल्कि उनकी आत्मा में बसे देवी-देवता हैं। अगर हमने इनकी मर्यादा बचा ली, तो हिमाचल सदा देवभूमि बना रहेगा।◆◆◆

श्री नीलकंठ महादेव 'जोगन वाली' मंदिर
त्रेता युग की प्राचीन धरोहर

सिरमौर के जिला मुख्यालय नाहन की तलहटी में स्थित अति प्राचीन स्वयंभू श्री नीलकंठ महादेव मंदिर जोगन वाली अपनी अद्भुत धार्मिक महत्ता और प्राकृतिक शांति के लिए प्रसिद्ध है। यह आलौकिक शिवलिंग नाहन के जवाहर नवोदय विद्यालय के पास से शुरू होने वाले कोटड़ी लिंक रोड पर स्थित है, और जुड़डे के जोहड़ से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर है। मंदिर के समीप ही मां मनसा देवी का भी प्राचीन मंदिर स्थित है। शहर की भागदौड़ से दूर, यह स्थान भक्तों को पहुंचते ही अद्वितीय शांति और ऊर्जा का अनुभव कराता है।

मंदिर में प्राय: हर सोमवार जलाभिषेक का आयोजन होता है, जबकि शिवरात्रि और श्रावण मास में श्रद्धालुओं की लंबी कतारें देखी जा सकती हैं। यह स्थान कालसर्प दोष निवारण और सोमवार के व्रतों के लिए अत्यंत उपयुक्त माना जाता है।

मंदिर का इतिहास त्रेता युग से जुड़ा हुआ है। परिसर में सदियों से प्राचीन धूना जलती आ रही है। कहा जाता है कि पहले यहां कोई जोगिन तपस्या में लीन रहती थी, इसलिए इसे 'जोगन वाली' कहा गया। महात्मा बाबा हरिऊंगिरी जी के अनुसार, पांडवों ने अपने अज्ञातवास के दौरान यहां शिव तपस्या की थी।

दसवीं शताब्दी में सिरमौर रियासत में आई उथल-पुथल के बावजूद यह मंदिर विद्यमान रहा। भूस्खलन के कारण अधिकांश ढांचा जमीन में समा गया, केवल शिवलिंग और गुंबद के कुछ अवशेष बाहर रहे। 1980 के दशक में स्थानीय निवासी हरिश्चंद्र सैनी ने इन अवशेषों को अपने घर ले जाने के बाद विपत्तियों का सामना किया। पंडितों और गणना विशेषज्ञों से परामर्श के बाद, भगवान शिव ने उन्हें स्वप्न में दर्शन देकर मंदिर पुनर्निर्माण का निर्देश दिया। उन्होंने इसका पालन करते हुए मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया।

इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में महात्मा हरिऊंगिरी जी को ध्यान में द्वापर युग की प्राचीन समाधियों का आभास हुआ, और खुदाई के दौरान महत्वपूर्ण प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए। महात्मा

जी बताते हैं कि यहां भगवान भोलेनाथ नीलकंठ विराजमान हैं, जिन्होंने समुद्रमंथन के दौरान विष पान कर सृष्टि की रक्षा की।

मंदिर का संरक्षण गुरु दत्तात्रेय विजयतेतराम और श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा, वाराणसी द्वारा किया जाता है। यहां आने वाले प्रत्येक श्रद्धालु की मनोकामना पूरी होती है और भगवान शिव की कृपा बनी रहती है। भविष्य में मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य भी प्रारंभ किया जाएगा, जिसमें श्रद्धालुओं की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा जाएगा।◆◆◆

आपदा मुक्त हिमाचल
के लिए राज्यपाल ने किया हवन

सावन पूर्णिमा के पावन अवसर पर राजभवन में आयोजित हवन यज्ञ ने हिमाचल प्रदेशवासियों के आध्यात्मिक विश्वास और प्रकृति के प्रति उनके सम्मान को दर्शाया। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने इस अवसर पर राज्य की शांति, सुरक्षा और प्राकृतिक आपदाओं से रक्षा की प्रार्थना की। उन्होंने हाल ही में मंडी जिले के आपदा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करते हुए वहां हुए जान-माल के नुकसान का स्मरण किया और दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए विशेष प्रार्थना की। लेडी गवर्नर जानकी शुक्ला एवं राजभवन के अधिकारियों ने भी हवन में श्रद्धा पूर्वक भाग लिया। राज्यपाल ने कहा कि हिमाचलवासी अपनी आस्था और विश्वास से जुड़े हैं और ऐसे आध्यात्मिक प्रयास राज्य को आपदाओं से सुरक्षित रखने में सहायक होंगे। यह अनुष्ठान न केवल भौतिक सुरक्षा प्रदान करता है बल्कि मानसिक शांति और सामूहिक विश्वास को भी मजबूत करता है। इससे हर हिमाचली विपदा का सामना साहस और धैर्य के साथ कर सकते हैं।◆◆◆

हिमाचल में स्वयं सहायता समूह द्वारा बनाई गई

सेब की बर्फी ने देशभर में धूम मचा दी

शिमला के चौहारा ब्लॉक में सेब से बनी एक अनोखी और अभिनव मिठाई, सेब की बर्फी ने पूरे देश में धूम मचा दी है। जय देवता जबल नारायण स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) द्वारा तैयार इस अनोखी बर्फी की काफी मांग है और अब इसे शिमला के द रिज स्थित लोकप्रिय एस्पिरेशनल हाट में प्रदर्शित किया जा रहा है। 325 रुपये प्रति डिब्बा की कीमत वाली यह मिठाई न केवल स्थानीय लोगों तथा कुल्लू और उसके आसपास के जिलों में भी लोकप्रिय हो रही है। एसएचजी की सदस्य सपना के अनुसार, यह बर्फी एक विस्तृत और स्वच्छ प्रक्रिया का उपयोग करके बनाई जाती है जो स्वाद और लंबे समय तक चलने दोनों को सुनिश्चित करती है। उन्होंने बताया, 'हम सबसे अच्छी गुणवत्ता वाले सेबों का चयन करके, उन्हें तीन-चार बार अच्छी तरह धोकर शुरुआत करते हैं। फिर उनका गूदा निकालकर धीमी आंच पर पकाया जाता है। पकाने की प्रक्रिया के दौरान इसमें सूखे मेवे डाले जाते हैं और जब मिश्रण गहरा भूरा हो जाता है, तो इसे ट्रे में फैला दिया जाता है। तीन-चार दिनों तक रखने के बाद, इसे टुकड़ों में काटकर पैक कर दिया जाता है।' यह बर्फी एक साल तक ताज़ी और फफूंदी-मुक्त रहने के लिए जानी जाती है।

उन्होंने कहा, 'हम हर महीने लगभग 25,000 रुपये के उत्पाद कुल्लू भेजते हैं और कामधेनु तथा स्थानीय बाज़ारों में भी पहुँचाते हैं। सेब की बर्फी बनाने में काफ़ी मेहनत लगती है और हमारी कीमत हर उत्पाद के पीछे के समर्पण को दर्शाती है।' उन्होंने राज्य सरकार को मेलों और आयोजनों में स्वयं सहायता समूहों को मुफ़्त स्टॉल लगाने की अनुमति देने के लिए भी धन्यवाद दिया, जिससे उनकी पहुँच बढ़ी है। चौहारा स्थित राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के एक कार्यकारी कुशल सिंह ने इस बात पर ज़ोर दिया कि स्वयं सहायता समूह ग्रामीण सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। अब डोडरा क्वार क्षेत्र में और अधिक महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए इसी तरह के उपक्रमों को समर्थन देने की योजनाएँ चल रही हैं। शिमला के उपायुक्त अनुपम कश्यप ने स्वयं सहायता समूहों की प्रशंसा करते हुए कहा, 'वे उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं, हम उनके उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण और मंच प्रदान करके उनका समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उनकी कई कृतियाँ अब पूरे देश और विदेशों में लोकप्रिय हैं।'◆◆◆

सात दिन में तैयार होगी अब मशरूम

खुंब निदेशालय चंबाघाट में नई किस्म ईजाद

देश में अब मशरूम महज सात दिन में तैयार हो जाएगी। खुंब निदेशालय चंबाघाट के वैज्ञानिकों ने गुलाबी ढींगरी प्रजाति ईजाद की है, जो हफ्ते में फसल दे देगी। यह खुलासा मशरूम निदेशालय चंबाघाट में इंडियन मशरूम कॉन्फ्रेंस के दौरान निदेशालय के वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार ने किया। कॉन्फ्रेंस में देश से लगभग 151 वैज्ञानिक, विद्यार्थी और मशरूम उत्पादक शामिल हुए। कॉन्फ्रेंस में कई शोध पत्रों पर चर्चा की। वैज्ञानिक डॉ. अनिल कुमार ने बताया कि गुलाबी ढींगरी की नई किस्म प्लीयूरोटस जेमोवार का सफल शोध हुआ है। इसकी फसल मात्र सात दिन में तैयार हो जाएगी। इसमें कई औषधीय गुण भी हैं। खासतौर पर लोवास्टैटिन नामक एक यौगिक मिला है जो कोलेस्ट्रॉल कम करता है। इससे अब मशरूम उत्पादकों के साथ-साथ इसे खाने के शौकीन लोगों को फायदा मिलेगा। जल्द ही यह किस्म बाजार में उपलब्ध होगी। किसानों को भी इसका बीज मुहैया करवाया जाएगा।

धर्मान्तरण का जाल

इन दिनों धर्मान्तरण सम्बन्धी समाचारों बाढ़ आ गयी है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि जाने कितने जलालुद्दीन उर्फ छांगुर हैं जो हिन्दुओं को इस्लाम में परिवर्तित करने के लिये देशभर में जाल बिछाये बैठे हैं। बलरामपुर जिले से जलालुद्दीन की गिरफ्तारी के बाद आगरा पुलिस ने अवैध मतान्तरण का बड़ा अन्तरराष्ट्रीय गिरोह पकड़ा है जो उत्तर प्रदेश सहित छह राज्यों में सक्रिय था। यह गिरोह विदेशी फण्डिंग की मदद से कम आयु की हिन्दू लड़कियों को तरह-तरह से प्रलोभन देकर उनका अवैध मतान्तरण करवा रहा था। डीजीपी राजीव कृष्ण ने बताया कि पकड़े गये आरोपितों के तार आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा व प्रतिबन्धित संगठन पापुलर फ्रंट ऑफ इण्डिया के अलावा सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इण्डिया से जुड़े होने के तथ्य सामने आये हैं। गिरोह को कनाडा, अमेरिका, लन्दन, दुबई व अन्य देशों से फण्डिंग के भी साक्ष्य मिले हैं। गिरोह ने बड़े पैमाने पर मतान्तरण कराया है। पूरे नेटवर्क की और गहनता से पड़ताल के लिये स्पेशल टास्क फोर्स (एसटीएफ) व आतंकवाद निरोधक दस्ते को भी लगाया गया है। गिरोह के कई अन्य सक्रिय सदस्यों की तलाश की जा रही है। यह गिरोह जनसांख्यिकीय परिवर्तन व राष्ट्रीय सुरक्षा में सेंध लगाने के उद्देश्य से विदेशी फण्डिंग, हवाला, डार्क वेब व अन्य नेटवर्क के माध्यम से लव-जिहाद व अवैध मतान्तरण को बढ़ावा दे रहा था।◆◆◆

मुस्लिम, ईसाई बने लोग फिर बनना चाहते हैं हिन्दू

अवैध मतान्तरण गिरोह से जुड़कर इस्लाम कबूल करने वाले अनेक हिन्दू युवक-युवतियाँ इस्लाम की सच्चाई जानने के बाद घर वापसी की बात कर रहे हैं। उनका कहना है कि इस्लाम में रहना नरक के समान है। हिन्दू धर्म लाख गुना अच्छा है। पूछताछ में ये लोग अपने मतान्तरण से लेकर गिरोह के लिये काम करने तक की पूरी जानकारी दे रहे हैं। जयपुर से गिरफ्तार पीयूष पवार युवती के प्यार में मोहम्मद अली बना। गिरफ्तार दस आरोपितों में से छह युवक ऐसे हैं जो मतान्तरण कर मुस्लिम बने हैं। ये सभी हिन्दू धर्म में वापस आना चाह रहे हैं। बहुत से एक्स मुस्लिम (इस्लाम छोड़ चुके मुसलमान) सोशल मीडिया पर इस्लाम के काले सच को सामने ला रहे हैं। उसका प्रभाव भी इन लोगों पर पड़ रहा है। हिन्दू संगठनों के प्रयास से ईसाई बन चुके लोग भी घर वापसी कर रहे हैं। इसके लिये हिन्दू समाज को आगे आना होगा। जो भी अपने लोग अन्य धर्मों में चले गये हैं, उन्हें सम्मान सहित अपने परिवारों में स्वीकारना होगा। आखिर सुबह का भूला शाम को घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते।◆◆◆

देवभूमि के वीर सपूत अरुण कुमार के बलिदान पर नमन

कुटलैहड़ विधानसभा का गर्व, भारतीय सेना के हवलदार अरुण कुमार ने अरूणाचल प्रदेश में मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। उनका यह बलिदान सिर्फ उनके परिवार के लिए नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र एवं राज्य के लिए अपूरणीय क्षति है। अरुण कुमार ने बहादुरी, निष्ठा और अदम्य साहस से देश सेवा की, और अपने प्राणों की आहुति देकर हमें सिखा गए कि वतन से बढकर कुछ नहीं। कुटलैहड़ विधानसभा क्षेत्र में उनका पार्थिव शरीर उनके पैतृक गांव लाया गया, जहां उन्हें पूरे सैन्य सम्मान के साथ अंतिम विदाई दी गई। आज हम सब मिलकर उन्हें नमन करते हैं और वचन देते हैं कि आपका बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा।◆◆◆

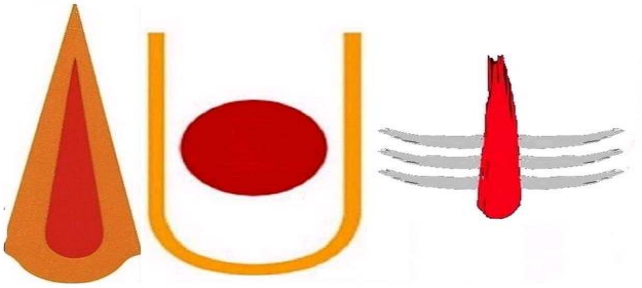

भारतीय परम्परा व संस्कृति में तिलक का महत्व

लकेश कुमार

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक परम्परा का कोई न कोई आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक महत्व रहा है। इनमें से एक प्रमुख परम्परा तिलक लगाने की है। तिलक केवल एक बाहरी चिन्ह नहीं, बल्कि यह मनुष्य की आस्था, श्रद्धा, सम्मान और शुभकामना का प्रतीक माना जाता है। भारतीय ग्रन्थों और परम्पराओं में तिलक को मंगलसूचक तथा पवित्रता का द्योतक बताया गया है। पूजा-पाठ, व्रत, विवाह, यज्ञ अथवा किसी भी शुभ अवसर पर तिलक का प्रयोग आज भी महत्व स्थान रखता है। तिलक भृकुटि स्थान पर लगाया जाता है, जिसे आज्ञा चक्र कहा जाता है। यह स्थान एकाग्रता, ज्ञान और आध्यात्मिक ऊर्जा का केन्द्र है। तिलक के माध्यम से न केवल धार्मिक भावनाएँ व्यक्त होती हैं, बल्कि यह व्यक्ति को मानसिक शांति, सामाजिक पहचान और सांस्कृतिक गौरव से भी जोड़ता है। इस प्रकार तिलक भारतीय परम्परा का वह महत्वपूर्ण अंग है, जो आध्यात्मिक उन्नति, सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरन्तरता का प्रतीक है।

तिलक का अर्थ शास्त्रों के अनुसार बताया गया है कि कोई भी शुभ कार्य में माथे पर लगाया जाने वाला बिंदु अर्थात तिलक होता है। अगर पूजा पाठ के समय हम बिना तिलक लगाए पूजा करते हैं तो वह पूजा निष्फल मानी जाती है। तिलक हमेशा मस्तिष्क के मध्य भाग (दोनों भौहों के बीच नासिका (नाक) के ऊपर प्रारंभिक स्थल पर) पर लगाया जाता है। हमारे मस्तिष्क के बीच में 'आज्ञा चक्र' होता है, जिसे 'गुरु चक्र' भी कहा जाता है। मस्तिष्क के बीच में केंद्र बिंदु होने के कारण हमारी एकाग्रता और स्मरण शक्ति बनी रहती है। यह चेतन-अवचेतन अवस्था में भी जागृत एवं सक्रिय रहता है, इसलिए इसे 'शिवनेत्र' अर्थात कल्याणकारी विचारों का केन्द्र भी कहा जाता है। शास्त्रों में इसके लिए एक स्तोत्र बताया गया है-

'अनामिका व देवस्य ऋषिणा च तथैव च ।
गंधानुलेपनं कार्य प्रयत्नेन विशेषतः ।।
पितृणाम अर्चयेत गंध तर्जन्या च सदैव हि
तथैव मध्यामांगुल्या धारयो गंधः स्वयं बुधे ।।'

अर्थात् घर आए अतिथि को अंगूठे से तिलक करना चाहिए, हमारे पितरों को तिलक लगाते समय तर्जनी का उपयोग करते हैं। जब हम खुद को तिलक लगाते हैं तो मध्यमा का प्रयोग करना चाहिए और ब्राह्मणों - पंडितों को लगाते समय अनामिका का प्रयोग करें। अनामिका को सूर्य का प्रतीक कहा जाता हैं।

विज्ञान की दृष्टि से देखें तो तिलक या टीका लगाने से मस्तिष्क के अग्र भाग में स्थित तंत्रिकाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। तिलक जहाँ लगया जाता है वह स्थान निर्णय क्षमता, स्मृति और विवेक का केंद्र होता है। जब इस स्थान पर चंदन या भस्म लगाया जाता है, तो वह मानसिक शीतलता, आत्म-संयम और आस्था का संचार करता है। राजाओं के राज्याभिषेक में राजतिलक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्रिया थी। अत: उस समारोह का नाम ही राजतिलक पड़ गया। राजतिलक के बिना उसका गद्दी पर अधिकार नहीं माना जाता था। उसकी वैधता तिलक से थी। तिलक धारण करना प्राचीनकाल से निरंतर चला आ रहा है। त्रेतायुग में भी यह प्रथा थी। भगवान श्रीरामचंद्र चंदन का तिलक लगाया करते थे। आज भी हम किसी देवालय में जाएं तो पंडित सर्वप्रथम आपके माथे पर तिलक ही लगाते है। हवन इत्यादि धार्मिक क्रियाओं में भी तिलक धारण करना आवश्यक प्रक्रिया है। तिलक अर्थात् टीका भारतीय समाज में सनातन पहचान का प्रतीक रहा है। पंडित श्रीमाली ने अपनी किताब यंत्र सिद्धि में लिखा है कि यज्ञोपवीत धारण करने व शिखा बंधन के ही समान तिलक धारण भी हिंदुत्व का प्रतीक है।

तिलक कौन से दिन लगाये उसका भी अपना महत्व हैं और दिन सकारात्मक बनाने के लिये अलग-अलग सामग्री के तिलकों का प्रावधान किया है। जैसे सोमवार के अधिष्ठाता देव शिव एवं नक्षत्र चन्द्रमा को साधने के लिये सफेद चन्दन, भस्म व विभूति के तिलक का प्रावधान है। मंगलवार को देव हनुमान व मंगलग्रह को साधने हेतु लालचंदन या चमेलीतेल मिश्रित सिन्दूर के तिलक का प्रावधान है। बुधवार को देव गणेश, दुर्गा व बुद्धग्रह की संतृप्ति के लिये सुखे सिन्दूरी तिलक का प्रावधान है। गुरुवार को देव ब्रह्मा व वृहस्पति ग्रह को साधने के लिये हल्दी या सफेद चन्दन में केसर मिश्रित तिलक का प्रावधान है। शुक्रवार को मौलक्ष्मी व शुक्र ग्रह के विकरणीय प्रभाव को साधने के लाल चन्दन या सुखे सिन्दूर का तिलक श्रेष्ठ माना है। शनिवार को देव भैरव, यमराज व शनि की सन्तुष्टि के लिये तिल का तेल मिश्रित सिन्दूर, भस्म या विभूति के तिलक का प्रावधान है। रविवार को देव विष्णु व सूर्य को संतृप्त करने के लिए हरि चन्दन के तिलक का प्रावधान है। तिलकीय प्रावधानों व प्रभावों के शौध एवं अनुसंधान की आवश्यकता तो सदा रहेगी परन्तु उपेक्षा, अनदेखी या उपहास उडाना तो निश्चय ही हमारी नासमझी ही है।◆◆◆

कम्बुज (कम्बोडिया) के निवासियों पर भारतीय प्रभाव

ईसा की प्रथम शताब्दी में भारतीय प्रवासियों ने फूनान के हिन्दूराज्य की स्थापना की थी। लगभग 600 वर्ष तक भारतीय राजा निर्वाधरूप से वहां पर शासन करते रहे। परन्तु छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय प्रभाव का मुख्य केन्द्र फुनान न रह कर कंबुज बन गया। भारतीयों और कंबुज-निवासियों में परस्पर वैवाहिक संबन्ध स्थापित होने से शनैः-शनैः संपूर्ण देश भारतीय रंग में रंग गया। भारत की तरह कंबुज दरबार में भी ब्राह्मण, ज्योतिषी, गायक और मंत्री बड़ी संख्या में निवास करते थे। इससे भारत से हजारों मील दूर शासन करते हुए कंबुज राजाओं के लिये भी भारतीय वातारण तैयार हो गया था। राजा राज्य के प्रधान देवता शिव की पूजा करता था। बारहवीं शताब्दी तक कंबुज में शिव की ही प्रधानता रही। शिव के अतिरिक्त अन्य देवताओं की पूजा भी होती थी। जब कोई नया नगर बसाया जाता था तो शिव अथवा किसी अन्य देवता की मूर्ति अवश्य प्रतिष्ठित की जाती थी। कंबुज के राजा मूर्तियां और मन्दिर बनवाने के बहुत अनुरागी थे। एक भी राजा ऐसा नहीं हुआ जिसने कोई नया मन्दिर या मूर्ति न बनवाई हो। जय वर्मा द्वितीय के बाद के सब राजा भवननिर्माणकला में बहुत रुचि रखते थे। इनमें से इन्द्रवर्मा प्रथम, यशोवर्मा, राजेन्द वर्मा और सूर्य वर्मा द्वितीय के नाम उल्लेखनीय हैं। सूर्यवर्मा द्वितीय ने ही अंकोरवत् के सुविख्यात वैष्णवदेवालय का निर्माण कराया था, जो अपनी उत्तम कारीगरी के लिये आज भी विश्वविश्रुत है ।

कंबुज पर हिन्दूसंस्कृति का इतना प्रभाव पड़ा था कि राजा, कुलीन लोग और पुरोहितों के नाम संस्कृतमय थे। वहां के राजा भारतीय राजाओं की ही तरह अपने नाम के पीछे 'वर्मा' शब्द का प्रयोग करते थे। राजा लोग ज्योतिष् पाणिनीयव्याकरण, धर्मशास्त्र और दर्शन में पूर्ण निष्णात होते थे। विशेष अवसरों पर शास्त्रोत्सव होते थे, जिनमें स्त्रियां भी भाग लेती थीं, और अपनी वक्तृत्वकला के बल पर विजयी होती थीं। राजा लोग महाहोम, लक्षहोम, कोटिहोम आदि वैदिकयज्ञ करते थे। वेदवेदांगों का अध्ययन होता था। छठी शताब्दी के एक लेख में रामायण, महाभारत और पुराण के अखण्ड पाठ का वर्णन है। आश्रमों और धार्मिक स्थानों में राजाओं द्वारा व्याकरण पढ़ाने के लिये आचार्य नियुक्त किये जाते थे। संस्कृत पढने पर बहुत बल दिया जाता था। संस्कृत में खुदे हुए लेख आज भी यह बता रहे हैं कि कंबुजनिवासियों को संस्कृत से कितना प्रेम था। अनेक पुस्तकालय थे जिनमें सब उत्तम पुस्तकों का संग्रह किया जाता था। ऐसे शिक्षणालय भी थे जिनमें विद्याध्ययन के पश्चात् शिष्य लोग गुरुओं को दक्षिणा दिया करते थे भारत के प्रसिद्ध विद्वानों के साथ जो कथायें यहां प्रसिद्ध हैं वे कंबुज में भी प्रचलित थीं। पतञ्जलि को शेषनाग का अवतार समझा जाता था। कंबुज के प्राचीन इतिवृत्तों में पाणिनीय और मनु के उद्धरण भी मिलते हैं।◆◆◆

Dr. Hem Raj Sharma
ANO- Rectal Surgeon (Kshar Sutra)
(Piles, Fistula, Fissure, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)

Chikitsak Guru RAV
National Academy of Ayrveda New Dehli under Ministry of Ayush,Govt of India
Formerly Incharge Medical Officer DAH Una, Govt of Himachal Pradesh
Director
JAGAT HOSPITAL & KSHAR SUTER CENTER
Near Govt College Una HP
Mob.: 94184-88660, 88940-68358, 94593-88323
Email: drhemrajsharma55@gmail.com

इतिहास शिल्पी ठाकुर राम सिंह जी

शिवा पंचकरण

ठाकुर राम सिंह ऐसे ही विशाल व्यक्तित्व का नाम है जिन्होंने अपने कठोर परिश्रम, ध्येयनिष्ठा और समर्पण से भारतीय इतिहास में भारतीयता के तत्व के वैचारिक धरातल को गढ़ा था। ऐसे कई इतिहासकार न केवल हिमाचल अपितु पूरे भरतवर्ष में हैं जो ठाकुर जी से संपर्क में आने के बाद इतिहास में भारतीय तत्व की खोज में लग गए।

ठाकुर राम सिंह जी का जन्म एक साधारण किसान परिवार में 16 फरबरी 1915 को हमीरपुर के झांडवि गाँव में पिता श्री भाग सिंह व माता श्रीमती नियातु देवी के घर में हुआ था। ठाकुर जी की प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय प्राथमिक पाठशाला भोरंज में हुई थी जिसके लिए उन्हें 10 कि.मी. रोज पैदल यात्रा करनी पड़ती थी। उसके पश्चात माध्यमिक स्तर की पढ़ाई हमीरपुर, और उच्च माध्यमिक शिक्षा पंजाब के होशियारपुर जिले में प्राप्त की थी। होशियारपुर में वह यूथ कॉंग्रेस के संपर्क में भी आए, उनके लिए चंदे में 100 रुपये भी इकट्ठे किए किन्तु उनके द्वारा पैसे की हेरा-फेरि किए जाने से आहत होकर उन्होने यूथ कॉंग्रेस छोड़ दी। ठाकुर जी 1942 में एफ.सी. महाविद्यालय लाहौर में एम.ए. की पढ़ाई के दौरान संघ के स्वयंसेवक बने और वहाँ की मॉडल टाउन शाखा के स्वयंसेवक थे। हॉकि के अच्छे खिलाड़ी होने के साथ-साथ एम.ए इतिहास में स्वर्ण पदक प्राप्त किया था और विश्वविद्यालय के प्राचार्य ने उन्हें इतिहास विभाग में पढ़ाने के लिए आमंत्रित भी किया था, किन्तु अपना जीवन मातृभूमि के कार्य में लगाने का ध्येय उन्होने निश्चित कर लिया था इस कारण उन्होने ने इस पद को ग्रहण करने के लिए असमर्थता जताई। 1942 में मध्यप्रदेश के खांडवा में संघ के प्रथम वर्ष लगा हुआ था, जिसमें 400 शिक्षार्थी उपस्थित थे, उन 400 शिक्षार्थियों में से 58 प्रचारक निकले जिनमें से एक ठाकुर राम सिंह जी भी एक थे। आपका कार्यक्षेत्र तत्कालीन प्रांत प्रचारक माधव राव मूले जी द्वारा तत्कालीन पंजाब और कांगड़ा निशित किया गया था। इस समय तक हिमाचल में संघ का कोई भी कार्य शुरू नहीं हुआ था। परिचय किसी से था नहीं, किन्तु देखते ही देखते उन्होने कांगड़ा शहर में दो सायं और एक प्रभात शाखा खड़ी कर ली। कुछ समय में कांगड़ा में काम बढ़ा और उन्हे 2 साल के भीतर अमृतसर बुला लिया गया, और अमृतसर विभाग प्रचारक का दायित्व सौंपा गया। तत्कालीन अमृतसर विभाग आज का उत्तर क्षेत्र ही था, जिसका कार्य ठाकुर राम सिंह जी देख रहे थे। भारत विभाजन के समय ठाकुर जी ने स्वयंसेवकों का नेतृत्व करते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संघ पर जब 1948 में पहला प्रतिबंध लगा तब भूमिगत रहते हुए संघ कार्य को ऊर्जा दी। परिवारों और कार्यकर्ताओं को संभाला। इसके पश्चात् आपका कार्यक्षेत्र आसाम हुआ जहां के प्रांत प्रचारक के रूप में आपने उत्तर्पूरवी क्षेत्र में संघ कार्य को बल दिया। असम जैसे दुर्गम क्षेत्र में आज भी संघ के स्वयंसेवक ठाकुर जी के बारे में बात करते हुए भावुक हो जाते हैं। ऐसे कई सारे लोग आज भी भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्र में हैं जिन्हें ठाकुर राम सिंह जी को देखने का सौभाग्य नहीं मिला किन्तु उनके द्वारा आसाम में खड़े किए गए संघ कार्य और सामाजिक कार्यों के आधार पर आज भी याद करते हैं। असम में राष्ट्र के लिए समर्पित शक्तियों को एक करने में ठाकुर जी ने अपना यौवन असम की सेवा में ही समर्पित कर दिया। असम के पश्चात् वह पुन: पंजाब लौटे और उसके पश्चात् अखिल भारतीय कार्यकारिणी मण्डल के सदस्य भी रहे। उनके जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा इतिहास संकलन योजना को बढ़ाना और इतिहास के पुनर्लेखन के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य था भारत की कालगणना की अवधारणा को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने का प्रयास करना।

ठाकुर जी के अनुसार वैदिक कालज्ञ ऋषियों ने सर्वप्रथम काल की 10 सूक्ष्म इकाइयों का आविष्कार किया और काल का परिगणन सूक्ष्मातिसूक्ष्म इकाई परमाणु से प्रारम्भ कर ब्रह्मांड को व्यापक करने बाली महानतम इकाई महाकल्प का निर्माण किया। 93-94 वर्ष की आयु में भी अपने कपड़े स्वयं ही धोते थे। जीवन के अंतिम दिनों तक प्रवास करते रहे। कार्य को लेकर पूरी दृढ़ता से समर्पित थे, कोई कार्य अधूरा नहीं छोडते थे। दायित्व मुक्ति के बाद भी निरंतर प्रवास करते रहे। अपना अंतिम समय उन्होने ठाकुर जगदेव चंद्र स्मृति शोध संस्थान नेरी को खड़ा करने, उसे मजबूत आधार देने में बिताया। इसके पीछे उनकी स्पष्ट कल्पना थी की भारत के इतिहास का पुनर्लेखन हो और देश-विदेश से शोधार्थी यहाँ आकार कार्य करे। इतिहास शिल्पी ठाकुर राम सिंह एक आदर्श स्वयंसेवक, इतिहास के ज्ञाता, कुशल संगठनकर्ता और अनेकों लोगों के मार्गदर्शक के रूप में 6 सितंबर 2010 को पंच तत्व में विलीन हो गए, किन्तु उनकी स्मृतियाँ आज भी शोध संस्थान नेरी में सरंक्षित हैं, वह एक विचार के रूप में आज भी वहाँ विद्यमान हैं। ◆◆◆

बलिदानी श्याम सिंह बिख्टा की वीरता

- कमल बिख्टा

हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला तहसील नेरवा की ग्राम पंचायत नेरवा-चन्दलोग के छोटे से गांव कलारा में 28 जनवरी 1974 को श्री नंदराम बिख्टा व श्रीमती देवकू देवी के घर में एक पुत्र का जन्म हुआ और और नाम रखा गया श्याम सिंह बिख्टा। श्याम सिंह अपने माता पिता की चार सन्तानों में से तीसरी संतान था, जिसमें बड़ी बहन रक्षा देवी रोशनी देवी एवं सबसे छोटे भाई श्री रमेश चंद बिख्टा था। श्री श्याम सिंह बिख्टा ने प्रारंभिक शिक्षा 10वीं एवं 12वीं रा.वा.मा.पा. नेरवा से पूर्ण की तथा कॉलेज की पढ़ाई के लिए सनातन धर्म महाविद्यालय नेरवा जिला शिमला का रुख किया। कॉलेज की पढ़ाई के साथ श्याम सिंह ने एनसीसी में भी भाग लिया। एनसीसी में भाग लेने के साथ ही श्याम सिंह के मन में देश सेवा का जज्बा भी जोर मारने लगा।

श्याम सिंह बिख्टा ने अपने देश की सेवा का सपना साकार करने के लिए और कड़ी मेहनत की और शिमला में आयोजित सेना भर्ती रैली में भाग लिया।

इस सैना भर्ती रैली में औरदार प्रदर्शन करने के साथ 29 दिसंबर 1994 को 20 वर्ष की आयु में भारतीय सेना की 13 जेएके राइफल बटालियन में सर्विस नंबर 13758323 के साथ राईफल मेन के पद पर तैनात हुए तथा एक वर्ष की बुनियादी प्रशिक्षण के लिए चला गया।

लगभग एक वर्ष सेना के कड़े प्रशिक्षण के पश्चात् जब श्याम सिंह बिख्टा पहली बार घर आया तो अपने छोटे भाई रमेश चंद से कहा कि 'छोटे मैने पहली बार' कागज के टारगेट पर गोली चलाई, बस एक बार 13 जेएके राइफल की वर्दी मिलने दे फिर देख जम्मू कश्मीर में देश के कितने दुश्मनों को मारता हूँ।

श्याम सिंह बिख्टा एक साधारण व संस्कारी परिवार का बेटा था। उसने अपने पिता के साथ घर की जिम्मेदारी को कंधा लगाया। इसी कड़ी में श्याम सिंह ने अपनी दोनों बहनों का विवाह करवाया तथा अपने छोटे भाई रमेश की पढ़ाई की व्यवस्था भी की।

आने वाले तीन चार वर्षो में परिवार बड़ी खुशहाली में समय व्यतीत कर रहा था। तभी 03 मई 1999 को पाकिस्तानी सेना द्वारा देश के उत्तर-पश्चिम भाग कारगिल में घुसपैठ की खबरों की पुष्टि हुई। 26 मई 1999 को भारतीय सेना में कारगिल में देश के दुश्मनों को खदेड़ने के लिए (आपरेशन विजय) आरम्भ किया था। 04 जुलाई 1999 को 13 जेएके राइफल पलटन को तोलोलिंग पहाड़ी के पॉइंट 4875 पर तिरंगा फहराने के आदेश हुए।

श्याम सिंह बिख्टा बुखार से बुरी तरह पीड़ित होने के बावजूद भी देश के दुश्मनों से दो-दो हाथ करने के लिए टारगेट की तरफ रवाना हुआ और अगली सुबह 05 जुलाई 1999 की प्रातः तोलोलिंग पहाड़ी की चोटी 4875 पर तिरंगा फहराने के पश्चात् उसी पर पूरी सेना की टुकडी विश्राम करने बैठ गई। कहीं दूर से तभी दुश्मन के स्नाइपर द्वारा चलाई गई एक गोली सीधी श्याम सिंह बिष्टा के सिर को भेदती हुई निकल गई, जिसके लगने से राइफल मैन श्याम सिंह वही पर वीरगति को प्राप्त हुए।

श्याम सिंह की टुकड़ी के कप्तान नवीन नागप्पा, श्याम सिंह को कुछ ऐसे याद करते उन्होंने अपने भाषण दि वॉर वेटरन में खुलासा किया है।

कैप्टन नवीन नागप्पा के शब्द, ''मेरा एक सिपाही श्याम सिंह, जिसकी तबीयत खराब थी, वह बुखार से बुरी तरह से पीड़ित था, न लेने का संदेश भेजा, उसके पश्चात श्याम सिंह, मेरे पास आया और मेरे अधिकारी होने के नाते लेने की आज्ञा मांग रहा था'' आगे श्याम सिंह के शब्द'' साहब अच्छे दिन में आपके साथ रहा- अभी बुरा वक्तू आया है तो मे आपको अकेला कैसे छोड़ दूँ खूदा न करे आप को कुछ हो गया तो, मैं अपने घरं, अपनी पलटन में मुँह कैसे दिखाऊंगा''। ये थे उस वीर सैनिक के देश के प्रति जज्बात जो उसे अमर कर गए। इस तरह मेरे परिवार के मेरे, छोटे, चचेरे भाई शहीद श्याम सिंह बिख्टा ने 24 वर्ष की आयु में देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। दूसरी तरफ भारत सरकार ने इस वीर सिपाही के अदम्य साहस, अद्भुत शौर्य एवं सर्वोच्च सेवा के लिए 'वीर चक्र' (मरणोपरान्त) से सम्मानित किया। यह बिख्टा परिवार एवं पूरे भारतवर्ष के लिए गर्व का विषय है।◆◆◆**लेखक रा.उ.व.मा. पाठशाला नेरवा में प्रवक्ता है।**

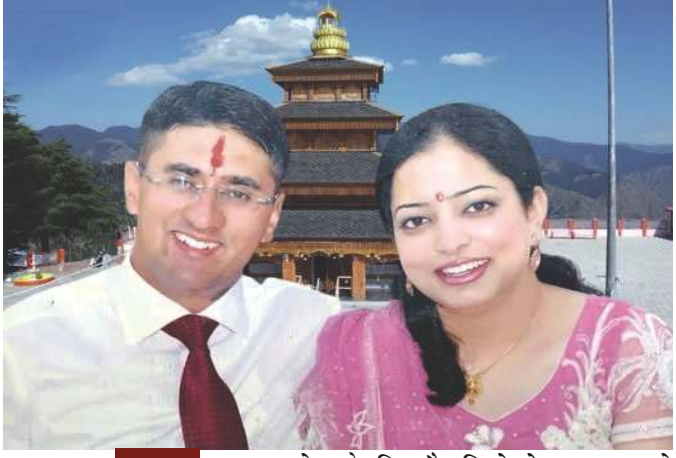

प्रेरणादायक है

कानून व जंगल के पहरेदार दम्पत्ति

दिनेश शर्मा और शीतल की कहानी

हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले से ताल्लुक रखने वाले एक दंपत्ति ने अपने-अपने क्षेत्रों में ऐसी मिसाल पेश की है, जो कानून, न्याय और पर्यावरण संरक्षण के तीन आदर्शों को एक साथ दर्शाती है। 2010 बैच के हिमाचल प्रदेश पुलिस सेवा अधिकारी दिनेश शर्मा कानून और न्याय के सख्त रखवाले हैं, तो पत्नी भारतीय वन सेवा अधिकारी शीतल शर्मा जंगलों और वन्य जीवों की समर्पित प्रहरी हैं। 2008 बैच की हिमाचल वन सेवा अधिकारी शीतल शर्मा को हाल ही में भारतीय वन सेवा अधिकारी के रूप में इंडक्शन मिला है। 5 अक्टूबर 1980 को हरिपुरधार के एक दुर्गम गांव बियोंग में जन्मे दिनेश शर्मा का बचपन चुनौतियों से भरा रहा। छोटी उम्र में पिता को खो दिया था। इस सदमे से उभरे नहीं थे कि सडक़ हादसे में भाई को भी खो दिया। लेकिन मां और बड़े भाई ने हिम्मत दी। गांव से प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद नाहन में जमा दो और ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की। दिल्ली में रहकर तैयारी की और तीन बार हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के साक्षात्कार में असफल होने के बावजूद हार नहीं मानी। आखिरकार 2010 में सफलता ने उनका साथ दिया और वे हिमाचल प्रदेश पुलिस सेवा अधिकारी बने।

सिरमौर के एचपीएस दिनेश शर्मा ने 15 साल के करियर में कई बड़ी उपलब्धियां हासिल की। करीब पांच साल पहले अफ्रीका के एक देश से पकड़ी गई पांवटा साहिब और करनाल में उत्पादित नशीली दवाओं की खेप के मामले में बड़ी सफलता हासिल की। यह मामला इंटरपोल के माध्यम से सीबीआई तक पहुंचा था, जिसके बाद सीबीआई ने इसकी जांच हिमाचल पुलिस को सौंपी। दिनेश शर्मा ने इस मामले में गहन जांच कर चार्जशीट दाखिल की और तीन अंतर्राज्यीय नशा तस्करी गिरोह का पर्दाफाश किया।

शिमला में डीएसपी (ट्रैफिक) के पद पर तैनात रहते हुए भी उन्होंने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं, लेकिन नारकोटिक्स विभाग में उनकी उपलब्धियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। शिमला में सेवा के दौरान अफ्रीकी मूल के एक नशा तस्कर को सलाखों के पीछे पहुंचाने और उसे सात साल की सजा दिलाने में उन्होंने अहम भूमिका निभाई, जो इस क्षेत्र में पहली बार हुआ।

बद्दी के एक बहुचर्चित मामले में भी दिनेश शर्मा ने एक फार्मा कंपनी द्वारा राजस्थान, पंजाब और हरियाणा में नशीली दवाओं की सप्लाई का खुलासा किया। इस मामले में न केवल धरपकड़ कराई गई, बल्कि करनाल (हरियाणा) में भी मामला दर्ज करवाया गया। 2015 में दिनेश शर्मा एक जुआ मामले में भी सुर्खियों में रहे। जुआरियों का एक ऐसा नेटवर्क था जो पुलिस की रेड की जानकारी पहले से लेकर सोशल मीडिया पर उसे लाइव कर देता था। इस रेड में साढ़े आठ लाख रुपए की बरामदगी हुई और जुआरियों पर कड़ी कार्रवाई की गई। 15 साल के अपने करियर में दिनेश शर्मा ने डीएसपी ट्रैफिक, सीटीएस, सीटी और नारकोटिक्स विभागों में तैनाती पाई है। उन्हें 2021 में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के पद पर पदोन्नत किया गया और अगले पांच साल के भीतर आईपीएस में शामिल होने की पूरी संभावना जताई जा रही है। मूलत: हमीरपुर से ताल्लुक रखने वाली आइएफएस शीतल शर्मा, पूर्व आईपीएस अधिकारी केसी शडियाल की बेटी हैं। हिमाचल में पिता की अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। शीतल शर्मा 2008 में हिमाचल प्रदेश वन सेवा अधिकारी के रूप में चयनित हुईं और हाल ही में भारतीय वन सेवा में शामिल हुई हैं। वाइल्ड लाइफ से लेकर पौधारोपण और पर्यावरण संरक्षण में उनका योगदान उल्लेखनीय है। वर्तमान में वे देहरादून में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं और वन्य जीव संरक्षण में विशेष योगदान देने का लक्ष्य रखती हैं।

2012 में विवाह के बंधन में बंधे इस दंपत्ति के दो बेटे हैं। दिनेश शर्मा का कहना है कि सच्ची सफलता केवल पद या प्रतिष्ठा से नहीं, बल्कि अपने कर्म, ईमानदारी और सेवा भाव से मिलती है। वहीं, शीतल शर्मा मानती हैं कि 'अनुशासन और संस्कार जीवन की असली पूंजी हैं।' यह दंपत्ति सिरमौर ही नहीं, पूरे हिमाचल के लिए एक प्रेरणा है। एक ओर कानून और न्याय के रखवाले एचपीएस दिनेश शर्मा, दूसरी ओर पर्यावरण और वन्य जीवों की समर्पित प्रहरी आईएफएस शीतल शर्मा, दोनों अपने मोर्चे पर सेवा और समर्पण का अद्भुत उदाहरण पेश कर रहे हैं।◆◆◆

मैं संघ परिवार से हूं, अपनी सेवाएं अपने देश को ही अर्पित करूंगी

- प्राची गुप्ता

लंदन के किंग्स कॉलेज के भव्य दीक्षांत समारोह में जब बडवाह की प्राची गुप्ता को अपनी रिसर्च और गहन अध्ययन के लिए नवाज़ा गया तो बड़वाह क्षेत्र में हर्ष का माहौल रहा। द पलेडियन हाऊस की चीफ एडुकेटर के रूप मैं अपनी सेवाएँ दे चुकी प्राची गुप्ता के सैकड़ों विद्यार्थियों ने मिठाइयाँ बाँटकर अपनी खुशी जाहिर की। प्राची गुप्ता ने भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एम.एड. की पढ़ाई की। तदोपरांत वे इन्टरनेशनल एजुकेशन पॉलिसी एंड सोसाइटी पर विशेष अध्ययन एवं रिसर्च करने के लिये लंदन के किंग्स कॉलेज गईं थी। अपनी बेहतरीन परफ़ॉर्मेंस के चलते प्राची गुप्ता को शिक्षा के क्षेत्र में दुनिया के नम्बर वन देश फिनलैंड में रिसर्च के लिए भेजा गया था। माइनस पाँच डिग्री तापमान वाले फिनलैंड में प्राची गुप्ता द्वारा किये गये रिसर्च वर्क को बहुत महत्वपूर्ण माना और इसके लिए किंग्स कॉलेज ने इन्हें विशेष रूप से सराहा।

भारत में शिक्षा सुधार कार्यक्रम के लिए प्राची गुप्ता की यह उपलब्धि बहुत महत्वपूर्ण मानी जा रही है और निकट भविष्य में इनके अध्ययन और शोध कार्यों को केंद्र सरकार के समक्ष प्रस्तुत करने की योजना भी है। प्राची गुप्ता ने बताया कि वर्तमान केंद्र सरकार इस दिशा में गंभीरता से प्रयास कर रही है और उनको विश्वस्तरीय अध्ययन कर्ताओं की आवश्यकता भी है। लंदन में यूनेस्को में अपनी सेवाएं देने के विषय में बात करने पर प्राची गुप्ता ने बताया कि मैं संघ परिवार से हूँ और मेरे लिए मेरा देश सर्वोपरि है इसलिए मैं अपने देश के लिए ही शिक्षा क्षेत्र में आगे अपनी सेवाएं देने की कोशिश करूँगी। प्राची गुप्ता का मानना है हमारा देश पहले शिक्षा में सर्वोत्तम था और हम सबको मिलकर इसे फिर वही स्थान दिलाना होगा। यह हम जैसे तमाम अध्ययनशील युवाओं के प्रयासों से ही संभव हो सकता है। वर्तमान समय में हमारे देश की स्थिति पर बोलते हुए प्राची गुप्ता ने कहा कि आज का युवा महानगरों की भीड़ में केवल पैकेज के लिये अपना जीवन और प्रतिभा लगाये हुए हैं जबकि शिक्षा जगत को उच्च शिक्षित गंभीर प्रतिभाओं की आवश्यकता है। प्राची गुप्ता के अनुसार यदि आने वाले दस वर्षों के लिए भारत के उच्च शिक्षित युवा अपनी दक्षता और ऊर्जा को देश के शिक्षा क्षेत्र में लगा दें तो हमारा देश सच में विश्व गुरु होने की दिशा में अग्रसर हो सकता है। प्राची गुप्ता की इस उपलब्धि को शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा क़दम माना जा रहा है। वरिष्ठ अध्यापक डी एस केशरे ने अपनी स्टूडेंट रहीं प्राची गुप्ता को एक गंभीर चिन्तक और विजनरी बताते हुए इन्हें बड़वाह का गौरव बताया।◆◆◆

माउंट युनम पर फहराया तिरंगा

लाहुल के पर्वतारोहियों ने नशा मुक्त हिमाचल का दिया संदेश

लाहुल-स्पीति में साहस सहनशक्ति और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रेरक प्रदर्शन में उत्साही पर्वतारोहियों की एक टीम ने नशा मुक्त हिमाचल का संदेश फैलाने के लिए बारालाचा के समीप 6111 मीटर ऊंचे माउंट युनम पर सफलतापूर्वक चढ़ाई की। टीम में लीडर गौतम ठाकुर, तकनीकी सलाहकार मोहन लाल, पर्वतारोहण उपकेंद्र जिस्पा, प्रशिक्षक सोनम तंजिन एलएंडएस, प्रशिक्षक अरुण मालपा एलएंडएस, फार्मासिस्ट वीरेंद्र एलएंडएस, उर्लिशा, एलीशा आदि शामिल रहे। चुनौतीपूर्ण मौसम और खड़ी, बर्फीली ढलानों का सामना करते हुए पर्वतारोही नशा मुक्त भारत अभियान का झंडा लेकर शिखर पर पहुंचे। इस अभियान का उद्देश्य नशीली दवाओं के दुरुपयोग के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और युवाओं को एक स्वस्थ, अनुशासित और उद्देश्यपूर्ण जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करना था।

हिमालय की वेदना और भोगवाद की अंधी दौड़

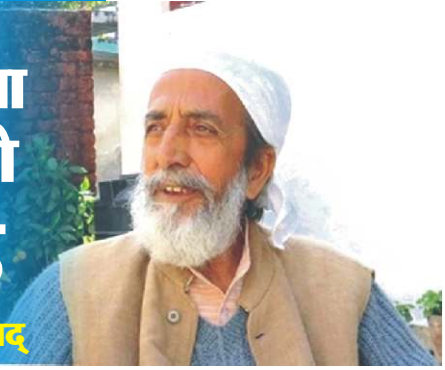

कुलभूषण उपमन्यु, पर्यावरणविद्

जलवायु परिवर्तन अब एक सच्चाई बन गई है। इससे बचने के लिए वैश्विक तापमान में और वृद्धि न हो इस बात का ख्याल रखना होगा। जिसके लिए वायु में जहरीली गैसें छोडने से बाज आना होगा। जितना जलवायु बदल चुका है उसके अनुरूप अपने व्यवहार और योजना निर्माण और विकास मॉडल को ढालने की जरूरत है - उपभोक्तावाद की संस्कृति के सर्वव्यापी फैलाव ने मानवीय विकास की परिभाषा को ही बदल दिया है। अब मानवीय मूल्यों से ज्यादा यह बात महत्वपूर्ण हो गई है कि कौन कितना ज्यादा आर्थिक रूप से समृद्ध है। जो ज्यादा से ज्यादा वस्तुओं का उपभोग कर सकता है वह ही महान है। फिर चाहे वह मानवीय संवेदनाओं के मामले में शून्य ही क्यों न हो। इससे एक ऐसा नकारात्मक वातावरण बन गया है जिसमें हर कोई किसी भी तिकड़म से अकूत संपत्ति इकठ्ठा करने की फिराक में है। जिससे मनमाने उपभोग की भूख को शांत किया जा सके। दूसरी ओर वस्तुओं के उत्पादन के पीछे के सिद्धांत भी बदल गए हैं। अब किसी वस्तु को संभाल कर रखने के बजाय यूज एंड थ्रो का सिद्धांत स्थापित हो गया है। यह उद्योग व्यापार के लिए वृद्धि प्रदान करने वाला है किंतु प्रकृति के ऊपर बहुत भारी पड़ रहा है। आखिर अनंत उपभोग के लिए कच्चा माल तो प्रकृति से ही आएगा। जिससे प्रकृति का दोहन प्रकृति की धारण क्षमता से कई गुणा ज्यादा हो रहा है। सादगी और आपसी सद्भाव से जीवन जीना कोई आदर योग्य मूल्य नहीं रहा है। अब तो जैसे-तैसे पैसा बटोर लो, राजनैतिक वरदहस्त प्राप्त करके या बाहुबल से मनमानी करने का लाइसेंस ले लो फिर उससे दूसरे के हितों का क्या होता है या प्रकृति पर कितना अत्याचार होता है इससे कोई सरोकार ही नहीं है। इस समझ से जब विश्व व्यवस्था चलती है तो प्राकृतिक आपदाओं और आर्थिक खींचतान जनित युद्धों का उद्भव होता है। हिमालय इसी गैर जिम्मेदार संस्कृति की चपेट में आ कर कराह रहा है, किंतु कोई सुनने वाला नहीं है। विश्वभर में सरकारें और विकास के योजनाकार और वैज्ञानिक जिस तरह के विकास का ताना-बाना बुन रहे हैं, उसमें सब कुछ समझते हुए भी प्रकृति विरोधी दिशा में ही हम आगे बढने को अभिशप्त हैं। पिछले तीन चार वर्षों में तो प्रकृति का क्रोध भीषण रूप से प्रकट हो रहा है। हिमाचल के मंडी का सराज क्षेत्र, चंबा, हमीरपुर, कांगड़ा, सिरमौर तक बाढ़ों और भूस्खलन की चपेट में है। पिछले इन वर्षों से लगातार जन धन की भयंकर हानि हो रही है।

उत्तराखंड की हालत भी खराब है। केदारनाथ त्रासदी के बाद से लगातार हर वर्ष कोई न कोई बड़ी त्रासदी सामने आ रही है। इस वर्ष धराली प्राकृतिक प्रकोप का शिकार हुआ है। असल में ये प्रकोप प्राकृतिक से ज्यादा मानव निर्मित है। चौड़ी सडकें, लापरवाह बांध निर्माण और नदी जल प्रवाह क्षेत्रों की अनदेखी करके जहां तहां भवन निर्माण, अनियोजित पर्यटन जैसे कई कारण हमने स्वयं निर्मित किये हैं। आपदा राहत जरूरी काम है किंतु उससे भी जरूरी यह बात है कि आपदा आए ही न। हिमालय नीति अभियान के कुछ साथियों ने मौके पर जानकारी हासिल कर यह जाना ध्वस्त थुनाग त्रासदी में क्षतिग्रस्त ज्यादातर भवन वहां नाले के प्रवाह क्षेत्र के आसपास बने थे, जहां पहले पनचक्कियां हुआ करती थीं। ऐसी कितनी ही अक्षम्य लापरवाहियां हम लगातार करते जा रहे हैं। सडक़ निर्माण एक बड़ी लापरवाही के रूप में उभरा है। खास तौर पर सडक़ निर्माण की तकनीक का हिमालय की नाजुक स्थलीय प्रकृति के अनुरूप न होना और निर्माण में भयंकर असावधानी। सडक़ निर्माण में निकलने वाले मलबे के निपटान में लापरवाही बरती जाती है ढलानों पर, नदी के प्रवाह क्षेत्र में या जहां मर्जी हुई वहीं पर मलबा फेंकने के असंख्य मामले सामने आ रहे हैं। हर गांव तक सडक़ पंहुचाने की योजना अच्छी है किंतु निर्माण पर्वतीय संवेदनाओं की अनदेखी करके किया जाएगा तो थुनाग या जोशीमठ घटने से कोई रोक नहीं सकता। उनकी मनमानी लापरवाहियों का शिकार प्रकृति और स्थानीय जनता को होना पड़ रहा है। बांध निर्माण की कोई सीमा नहीं निश्चित की गई है। संवेदनशील स्थलों को बांध मुक्त होना चाहिए। एक नदी में अधिकतम कितना दोहन जल विद्युत के लिए होगा इसकी भी कोई सीमा नहीं है। ग्लेशियर पिघल कर हिमालय में खतरनाक झीलें बन रही हैं। कच्चे मलबे से बनी ये झीलें अचानक टूट कर मैदानों में भयंकर तबाही लाती हैं। एक शोध में सामने आया है कि जितना वनक्षेत्र देश में 2015 से 19 के बीच बढ़ा उससे अठारह गुणा वनक्षेत्र हमने खोया। इसके खिलाफ बोलना खतरे से खाली नहीं है। वर्तमान विकास मॉडल हिमालय की नाजुक प्रकृति के अनुकूल नहीं है। अब सर्वोच्च न्यायालय ने भी हिमाचल में विकास की दिशा पर सवाल खड़ा कर दिया है कि इसी तरह चलता रहा तो हिमाचल के अस्तित्व पर ही खतरा आ जाएगा। इस मौके का लाभ उठा कर क्या केंद्र और राज्य सरकारें व्यापक चिंतन और सभी संबंधित पक्षों, वैज्ञानिकों, भूगर्भ वेत्ताओं और स्थानीय मेधा का उपयोग करके हिमालय के संरक्षण आधारित विकास का निरापद मॉडल विकसित करने की पहल करेंगी। ◆◆◆

डॉ. कर्म सिंह
लेखक एवं साहित्यकार

हिमाचल में प्राकृतिक संसाधन और पर्यावरण से जुड़ी चुनौतियां

हिमालय क्षेत्र प्रकृति का अलौकिक भंडार है। यहां के घने जंगल, बर्फीले पहाड़, नदियों की निर्मल धारा, औषधियां, वनस्पतियां, वन्य जीव जंतु और प्रकृतिप्रेमी मनुष्य सदियों से पर्यावरण के संतुलन को बनाए हुए हैं। यहां का जनजीवन, शुद्ध जलवायु के लिए प्रसिद्ध है। इसीलिए यह क्षेत्र स्वास्थ्य, अध्यात्म और ज्ञान परंपरा तथा योग साधना के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा है। आज भी ये परंपराएं जीवंत हैं परंतु विकास और भौतिकवाद एवं उपभोक्तावाद की बढ़ोतरी से उनका संतुलन बिगडने़ लगा है। आज प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और जलवायु के असंतुलन से पर्यावरण का बिगडना़ गहन चिंता का विषय बन चुका है। मौसम का बदलता मिजाज, बरसात में बादलों का फटना, बाढ़ आना, बर्फ कम पडना और ग्लेशियरों का पिघलना, जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारण हैं। अब मनुष्य प्रकृति का मित्र न होकर विनाशक बनकर प्राकृतिक संसाधनों की लूट का हठ करने लगा है इसलिए हर मौसम में परेशानियां बढने़ लगी हैं।

प्राकृतिक संसाधनों में वन, जलस्रोत, जैविक विविधता और भौतिक संसाधनों में जल विद्युत परियोजनाएं, सडक़ों, भवनों, उद्योगों का निर्माण प्रमुख है।

वन संसाधन – हिमाचल का लगभग 27 प्रतिशत क्षेत्र वनों से ढका हुआ है। देवदार, चीड़, कैल, ओक, बुरांश, बान आदि प्रमुख हैं। वन स्थानीय आबादी के लिए लकड़ी, ईंधन, औषधीय पौधे और पशु-चारा उपलब्ध कराते हैं। हिमाचल प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री डॉ यशवंत सिंह परमार ने त्रिमुखी वन नीति का ऐलान किया था ताकि हिमाचल प्रदेश में इमारती लकड़ी जलने के लिए ईंधन और पशुओं के लिए चारा तथा फल आदि मिल सकें परंतु इसके बावजूद हिमाचल में चीड़ों के जंगल उगाए जाने लगे और देवदार तथा बान के जंगलों का सफाया होने लगा। रही सही कसर वन माफिया ने जंगलों को काटकर पूरी कर दी। यह सिलसिला आज भी जारी है जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण इस बरसात में थुनाग क्षेत्र में आई बाढ़ में मिला, जिसमें देवदार के असंख्य शहतीर भी बहते हुए देखे गए, जो संभवत अवैध रूप से काटकर जंगलों में छुपा कर रखे गए होंगे। वैसे वन संपदा को बचाने के लिए हर वर्ष बरसात में कुछ पौधे लगाए जाते हैं लेकिन सही देखरेख न होने पर वे सूख जाते हैं। अगले साल फिर यही रस्म निभाई जाती है। अब तो शिमला जैसे स्मार्ट सिटी में देवदार के खतरनाक पेड़ों को काटने के लिए समितियां भी बनाई गई हैं जिसकी सिफारिश पर सालों पुराने देवदार के पेड़ों का सफाया कर दिया जाता है। सडक़ों और भवनों के निर्माण के लिए पेड़ों का काटा जाना आम बात हो गई है। न के लिए असंख्य पेड़ बेरहमी से काट दिए गए हैं जिसकी भरपाई के लिए अब फूल पौधे लगाकर पर्यावरण को बचाने का मजाक किया जा रहा है। देवदार का जो पेड़ सैंकडों सालों तक आंधी तूफान सहकर भी किसी के लिए खतरा नहीं बना, अब उसकी जड़ों में तथा आसपास अवैध इमारतों का निर्माण होने से वही पेड मकान तथा आदमी के लिए खतरा बन जाता है और उस बेचारे खतरनाक पेड़ को काट दिया जाता है। विकास के नाम पर प्रदेश एवं केंद्र सरकार द्वारा असंख्य पेड़ों को काटने की अनुमति दे दी जाती है जबकि आम आदमी अपने खेतों के पेड़ों को भी नहीं काट सकता है। देवघर और बन के पेड़ों को काटकर उनके बदले में सडक़ों के किनारे तथा बीच में छोटे-छोटे पौधे लगा कर पर्यावरण का ढोंग किया जा रहा है । अवैध लकड़ी कटान, सडक़ निर्माण और पर्यटन के दबाव से जंगल घट रहे हैं। इससे भूस्खलन और जलस्रोतों का सूखना बढ़ा है। हर कोई वर्षों के जल से भूमि के कटान से परेशान है परंतु फिर भी वृक्षों को काटने की मुहिम जारी रहना दुर्भाग्यपूर्ण है।

जल संसाधन – सतलुज, व्यास, रावी, चिनाब और यमुना जैसी नदियां यहाँ से निकलती हैं। पनबिजली उत्पादन की विशाल क्षमता (लगभग 27,000 मेगावाट) है। जल सिंचाई, पेयजल और मत्स्य पालन का भी स्रोत है। पर्यटन और शहरीकरण के कारण नदियों में प्लास्टिक और सीवरेज का प्रवाह शामिल हो गया है। मकान के हार्वेस्टिंग टैंक का पानी भूमि में रिशसता रहता है जो भूमि के कटाव का कारण बन जाता है।पारंपरिक धरोहर न्हौण, पनघट, 'नौला' और 'चश्मे' बाबडी कुंआं चश्में सब सूख रहे हैं।

हिमाचल में पारंपरिक जल स्रोतों की अनदेखी पर्यावरण

और स्थानीय समाज दोनों के लिए गंभीर नुकसान का कारण बन रही है, क्योंकि ये स्रोत न सिर्फ पानी की जरूरतें पूरी करते थे, बल्कि जलवायु का संतुलन बनाए रखने में भी अहम भूमिका निभाते थे। ये हिमालयी संस्कृति और जीवनशैली का हिस्सा थीं। हर घर जल की मुहिम ने प्राकृतिक जल स्रोतों के रखरखाव तथा उपेक्षा भाव को बढ़ाया है। पाइपलाइन आधारित जल योजनाओं पर अत्यधिक निर्भरता सुविधा की दृष्टि से सही है परंतु इसके साथ-साथ प्राकृतिक जल स्रोतों का संरक्षण तथा उपयोग भी जरूरी किया जाना चाहिए। शहरीकरण और सडक़ निर्माण के दौरान जल स्रोतों का ढकना या मिटा देना विकास की उचित प्रक्रिया नहीं है। संभवत इन प्राकृतिक स्रोतों के बंद होने से जाने अनजाने में बोतल के पानी को भी बढ़ावा मिल रहा है। युवाओं में इनकी देखभाल के प्रति रुचि कम होना भी अच्छा संकेत नहीं है। जंगल कटने और ग्लेशियर पिघलने से जलधाराओं का सूखना गंभीर चिंता का विषय है। कई गांवों में पहले प्राकृतिक जल स्रोतों, बावडियों और सालभर पानी मिलता था, अब गर्मियों में टैंकरों पर पानी सप्लाई करने की मांग बढ़ती जा रही है। खुदाई के दौरान झरना और भूमिगत जल स्रोतों का रास्ता बदल जाता है। अंदर ही अंदर जमीन खोखली होने लगती है और बरसात के पानी के तेज बहाव के कारण भूमि का कटाव होने लगता है। मकान तथा सडक़ों के निर्माण के लिए खुदाई से निकला मलबा, नदियों और नालों में गिरकर जल प्रदूषण फैलाता है। इससे मछलियों, जलीय पौधों और स्थानीय का नुकसान होता है।

भूस्खलन और प्राकृतिक आपदाएं - ऊँचाई पर सडक़ों और भवनों का अत्यधिक निर्माण ढलानों को कमजोर करता है। मानसून में भारी वर्षा से अचानक बाढ़ और भूस्खलन बढ़ रहे हैं।

छोटी-छोटी पहाडियों पर भारी भरकम मकान और शहर बसाया जाना भविष्य में खतरनाक साबित हो सकता है। अनियंत्रित खनन से मिट्टी का कटाव, धूल प्रदूषण और जलधाराओं में गाद भरना पर्यावरण संतुलन का ही एक उदाहरण है। पहाड़ों की मिट्टी और चट्टानें भूकंप और भूस्खलन के प्रति संवेदनशील होती हैं। सीमेंट और सरिए से बनाई गई बहुमंजिला इमारतों का भार ज़मीन की स्थिरता कम कर देता हैं। पहाड़ी ढलानों को काटकर निर्माण करने से जमीन कमजोर हो जाती है। फिर बारिश के समय मिट्टी का कटाव तेज़ होता है और चट्टानें खिसकने लगती हैं। पहाड़ी ढलानों से मलबा, पत्थर और मिट्टी वाला तेज बहाव घर, सडक़ें और पुल बहा ले जाता है ।

मशीनों से गहरी और चौड़ी खुदाई होने से पहाड़ों की मजबूती कमजोर हो जाती है। कटाव और दरारें बढने से बरसात में मिट्टी और चट्टानों का खिसकना और मलबा बहने की घटनाएं तेज़ हो जाती हैं। खेतों में जमा पानी फसलें नष्ट कर देता है और उपजाऊ मिट्टी बहा ले जाता है। अचानक आई बाढ़ में लोग और पशु बह जाते हैं, साथ ही संपत्ति का भारी नुकसान होता है। इस तरह पहाड़ी क्षेत्रों में सीमेंट और बहुमंज़िला मकानों का निर्माण पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा बन रहा है, क्योंकि यह प्राकृतिक संतुलन, भूगर्भीय स्थिरता और जलवायु को प्रभावित करता है।

ग्लोबल वार्मिंग ग्लोबल वार्मिंग से पर्यावरण को कई गंभीर खतरे उत्पन्न हो रहे हैं, क्योंकि यह पृथ्वी के औसत तापमान में निरंतर वृद्धि का परिणाम है। तापमान में वृद्धि से गर्मी , सूखा, बाढ जैसी घटनाएं बढ़ रही हैं। ऋतुओं का चक्र असंतुलित हो रहा है, जिससे कृषि उत्पादन पर असर पड़ता है।वनों की कमी तथा शहरों और गांव में छोटी तथा बड़ी पक्की सडक़ों से बरसात का पानी एकदम बहने लगता है उसका हरसाब नहीं हो पाता है जो थोड़ी ही देर में बाढ़ का रूप धारण कर लेता है। बादल फटने तथा पहाड़ की चोटियों पर अत्यधिक बारिश होने पर खड्डों और नालों के बीचों बीच बनाए गए घर और बाजार बह जाते हैं। हिमालय के ग्लेशियरों का पिघलना हिमालय में लगभग 9,500 से अधिक ग्लेशियर हैं, जिनमें गंगोत्री, सियाचिन, पिंडारी, मिलम, ज़ेमू, और सतलुज बेसिन के कई ग्लेशियर प्रमुख हैं। इन्हें 'एशिया का जल टॉवर' कहा जाता है, क्योंकि ये गंगा, ब्रह्मपुत्र, सिंधु और यांग्त्ज़ी जैसी नदियों के जल स्रोत हैं। कई ग्लेशियरों का आकार पिछले 50 वर्षों में तेजी से कम हुआ है।

बादलों का फटना (Cloudburst) बादलों का ठटना एक अत्यंत तीव्र और स्थानीय वर्षा की घटना है, जिसमें कम समय में बहुत अधिक मात्रा में बारिश होती है। यह पहाड़ी और ऊँचाई वाले क्षेत्रों में ज़्यादा देखने को मिलती है। इसका सीधा संबंध बाढ़, भूस्खलन और जान-माल के नुकसान से है। जब नमी से भरी गर्म हवा तेजी से ऊपर उठती है और ऊँचाई पर ठंडी हवा से टकराती है, तो पानी से भरा बादल पानी को अधिक ऊंचाई तक नहीं ले जा पाता है और पानी वाष्प बनकर तेजी से संघनित होकर भारी मात्रा में बारिश कर देता है। मॉनसून के समय वातावरण में नमी का अत्यधिक जमाव और स्थिरता बादलों के फटने की संभावना बढ़ा देता है। इस प्रकार हिमालय क्षेत्र विशेषकर हिमाचल और उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में यदि समय पर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण नहीं किया गया वनों को नहीं बचाया गया और जल स्रोतों की रक्षा नहीं की गई तो गर्मी सूख बाढ और प्राकृतिक आपदाओं से जन जीवन की सुरक्षा करना कठिन हो जाएगा।◆◆◆

डॉ. सपना चंदेल
सहायक प्रोफेसर, एच.पी.यू.

भारत में शिक्षक दिवस हर वर्ष देश के द्वितीय राष्ट्रपति, महान दार्शनिक, विद्वान और शिक्षक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिवस होता है ।

वर्ष 1962 में जब डॉ. राधाकृष्णन राष्ट्रपति बने, तब उनके कुछ शिष्यों व मित्रों ने उनका जन्मदिन मनाने की अनुमति मांगी। उन्होंने कहा 'यदि आप मेरे जन्मदिन को वास्तव में मनाना चाहते हैं, तो इसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाएं।' तब से 5 सितम्बर को भारत में शिक्षक दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाने की परंपरा है।

वस्तुत: संसार के असंख्य प्राणियों में केवल मात्र मनुष्य को ही यह सौभाग्य है कि वह शिक्षा और संस्कार द्वारा अपने जीवन का निर्माण कर सकता है। इसके लिए उसे माता-पिता आचार्य एवं शिक्षकों द्वारा शिक्षा तथा संस्कार प्रदान किए जाते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में अर्थ है-अध्ययन करना, सीखना, अभ्यास करना। शास्ति या सा शिक्षा अर्थात् जो अनुशासन में रहना सिखाती है, वह शिक्षा है। इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जीवन पर्यंत, कुछ न कुछ सीखता रहता है, जिससे उसका जीवन अनुशासित बना रहता है। बिना शिक्षा एवं अनुशासन के जीवन अधूरा है। मनु स्मृति में शिक्षा का उद्देश्य है सत्य, धर्म और आत्मज्ञान की प्राप्ति। तैत्तिरीय उपनिषद् में शिक्षा को गुरु द्वारा शिष्य में विद्या, आचरण और आत्मसंयम के रूप में स्थापित करने की प्रक्रिया माना गया है। पारंपरिक अर्थ में शिक्षा केवल अक्षरज्ञान नहीं, बल्कि समग्र व्यक्तित्व का विकास है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक उन्नति सम्मिलित है। इस दृष्टि से शिक्षा में नैतिकता, राष्ट्रवाद,समर्पण एवं सेवा भावना का होना अत्यंत जरूरी है।

'सा विद्या या विमुक्तये' वह विद्या ही सच्ची है जो मुक्ति दिलाए। मुक्ति अर्थात् अज्ञान, भय और दु:ख से मुक्ति। नशाखोरी, दुराचरण, भ्रष्टाचार, अनैतिकता आदि दुर्गुणों एवं दुर्व्यसनों से छुटकारा शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।'विद्या ददाति विनयं' विद्या से विनम्रता आती है, और विनम्रता से यश। मिलता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल किताबी कीड़ा होने में कुशलता नहीं, बल्कि सद्गुणों का विकास है। भारतीय परंपरा में शिक्षा का अंतिम उद्देश्य व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र एवं 'लोकसंग्रह' यानी समाज के कल्याण में योगदान देना है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा व्यक्तिगत विकास के अंतर्गत एक नागरिक को सभ्य, स्वावलंबी, नैतिक और विवेकी बनाती है। शिक्षा से सहयोग, सहिष्णुता और बंधुत्व की भावना विकसित होती है। वेद, उपनिषद, पुराण, दर्शन, कला और शास्त्रों की परंपरा शिक्षा के माध्यम से ही सुरक्षित रही।

शिक्षक दिवस का यह अवसर विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है। यह दिन शिक्षकों के प्रति आभार, सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करने का प्रतीक है। परंपरा के अनुसार, इस दिन विद्यार्थी अपने शिक्षकों को अभिनंदन पत्र, पुष्प, उपहार और संदेश देकर सम्मानित करते हैं। कई विद्यालयों में वरिष्ठ छात्रों को शिक्षक की भूमिका निभाने का अवसर मिलता है, ताकि वे शिक्षक के गौरव का अनुभव कर सकें। राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार भी इसी अवसर पर राष्ट्रपति द्वारा प्रदान किए जाते हैं। विभिन्न शिक्षण संस्थानों में सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटक, कविता पाठ, भाषण प्रतियोगिताएं छात्रों द्वारा शिक्षकों को सम्मानित करना, कक्षा में छात्रों का 'अस्थायी शिक्षक' बनना, शिक्षा नीति और सुधारों पर संगोष्ठी व विचार-विमर्श होना शिक्षा के प्रचार के अनेक प्रकल्प हैं। वर्तमान में शिक्षा एक व्यवसाय बनती जा रही है जिसमें गुरु शिष्य परंपरा का कमजोर होना, शिक्षा के मूल उद्देश्य से दूर जाने का कारण है। शिक्षा में जब तक गुरु और शिष्य का संबंध नहीं बनता तब तक शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति होना संभव नहीं है। अत: शिक्षा के मूल उद्देश्य के अनुसार ही आत्मीय एवं सम्मानजनक शिक्षा के विभिन्न अंगों को पुष्ट किए जाने की जरूरत है।◆◆◆

केन्द्रीय बजट 2025-26 में प्रधानमंत्री द्वारा घोषित जिस धन-धान्य कृषि योजना को केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मंजूरी दी है, वह कृषि क्षेत्र में बड़े सुधार करने का वायदा तो खैर करती ही है, भारत को आत्मनिर्भर और जलवायु- अनुकूल कृषि व्यवस्था की ओर ले जाने का संकल्प भी दर्शाती है। योजना के तहत अगले छह वर्षों में चौबीस हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्ष के निवेश के साथ सौ जिलों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इन जिलों का चयन इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन सभी में फसलों का उत्पादन कम, फसलों की सघनता मध्यम और ऋण उपलब्धता औसत से कम है। इस योजना की खास बात यह है कि यह नीति आयोग के आकांक्षी जिला कार्यक्रम से प्रेरित है, और जो केंद्र के ग्यारह मंत्रालयों की छत्तीस मौजूदा योजनाओं को एकीकृत करेगी, जिससे संसाधनों का कुशल उपयोग सुनिश्चित होगा। भारतीय कृषि को लंबे समय से कम उत्पादकता, जलवायु में बदलाव, और अपर्याप्त बुनियादी ढांचे जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। यह योजना इन चुनौतियों के अलावा, टिकाऊ खेती को बढ़ावा देकर पर्यावरण संरक्षण को भी प्राथमिकता देती है। योजना के तहत फसल विविधीकरण के माध्यम से किसानों की एक ही फसल पर निर्भरता कम होगी। यह योजना खासकर छोटे और सीमांत व महिला किसानों, कृषि तकनीकी स्टार्टअप और स्वयं सहायता समूहों को फायदा पहुंचाएगी अनुमान है कि इस योजना से करीब 1.7 करोड़ किसान लाभान्वित होंगे, जिससे स्वाभाविक ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था का भी विकास होगा। इसकी सबसे बड़ी खासियत है कि यह केवल सब्सिडी आधारित राहत न होकर, संरचनात्मक सुधारों पर केंद्रित है। इससे किसान उत्पादन से लेकर विपणन तक के हर चरण में सशक्त बनेगा। हालांकि कम उत्पादकता वाले सौ जिलों का चयन और वहां रणनीतियों का प्रभावी कार्यान्वयन एक जटिल प्रक्रिया होगी। इसके अतिरिक्त, किसानों तक योजना की जानकारी और लाभ पहुंचाने के लिए जागरूकता अभियान और प्रशिक्षण की जरूरत होगी। आवेदन प्रक्रिया को सरल व पारदर्शी बनाना भी उतना ही जरूरी है, ताकि छोटे और सीमांत किसान आसानी से इसका लाभ उठा सकें। टिकाऊ खेती के लिए मिट्टी की सेहत, जल संरक्षण और रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने की भी जरूरत है। देश की खाद्य सुरक्षा, रोजगार और निर्यात के संदर्भ में यह योजना भारतीय कृषि का कायाकल्प करने की क्षमता रखती है, बशर्ते इसका सही ढंग से कार्यान्वयन भी हो।◆◆◆

दिल के आकार वाला अनोखा सेब

जिस पर लिखा है 'LOVE' - हिमाचल में पहली बार तैयार

शिमला जिला के कोटखाई क्षेत्र के प्रगतिशील बागवान **संजीव चौहान** ने भारत में पहली बार ऐसा अनोखा सेब उगाया है, जिसका आकार दिल जैसा है और जिस पर अंग्रेज़ी में 'LOVE' लिखा दिखाई देता है। संजीव चौहान का कहना है कि उन्होंने यह तकनीक चीन से सीखी और आयात की है। इसके लिए विशेष सांचे (मोल्ड्स) का इस्तेमाल किया जाता है। जब फल छोटा होता है, तभी उस पर सांचा चढ़ा दिया जाता है। जैसे-जैसे फल बड़ा होता है, वैसा ही उसका आकार और अक्षर उभर कर आ जाते हैं। लगभग 2 से 3 महीने में यह खास सेब पूरी तरह तैयार हो जाता है। इस अनोखे सेब की खूबसूरती और आकर्षण के चलते बाजार में इसकी कीमत 500 से 1000 रूपए प्रति फल तक पहुंच गई है। बागवान संजीव चौहान अब इस तकनीक का प्रयोग नाशपाती पर भी करने की योजना बना रहे हैं।◆◆◆

आनंद अनुभूति

मृत्यु योग बनता रहा पर मेरे महाकाल
काल का भक्षण करते रहे।
शत्रु योग बनता रहा पर मेरी मां काली
शत्रुओं का रक्त पान करती रही।
भयभीत करने का प्रयास लोग करते रहे
मगर मेरे कालभैरव भय के साथ भयाकारक का भी
भयानक विनाश करते रहें।
दुरात्मा योग बनता रहा पर मेरे सदाशिव
ज्ञानामृत देकर पापमुक्त करते रहे।
वियोग का योग बनता रहा पर मेरी मां काली का
ममतामई स्पर्श आनंदमय करता रहा।

डॉ.राजीव डोगरा, कांगड़ा हिमाचल प्रदेश (युवा कवि लेखक)

पाउड़ी कबता - सोअण रीयां चड़िया

सौअण दिया चडियां, देईयां रौंणकां लाईयां
चख नेअरी लेईने ,छम- छम बरदीयां बरखां आईयां
चिट्टे- कआले वधलां ,थांई अम्बरां पर मलियां
गढ़- गढ़ करदे खिटांअ दीन्दे ,वध्धल
लिछकदीयां चमाके मारदिया, बिजलीयां चलियां
टक्की लैंणा सूरज, लगदा सौआं न पाईयां
सौअण दिया चडियां देईयां रौंणकां लाईयां।
तांई चिटटे- काअले बध्धले रियां लैफां चअढांईयां
रूअऐ दिया लगदा सेअजा, गासे सजी मणांईयां
करना आवोभगत सैाअण मीअने रा ,दव्वो- दब्बी आईयां
जाअलु छड़- छड़ बरदीयां बरखां, मणांई के लडियां
लगदीयां मतियां खरीयां, कुन्नी हुन्गीयां जी ऐह घडियां
कितणीया छैल बाँकियां, जीए सौअण दियां चडियां।।
उछलियांदे खड्ड़ नाअलु,सरूडे, गोरू वत्तां मणियां
न्यांणेया कसरां पूरीयां, सवीमिगपुलां रीयां कडियां
कागदां री किश्तियां चलाई ,मौजां लैणं खरीयां
काबड़ लेईने दिखा ,कितणीयां जा्त्रा चलियां
भोले बाबे जो पाणीए रा टिक्का, लाणे दियां
मस्सतीयां मस्त-मस्त मतियां चडिया
मतीयां छैल बाँकियां, जीए सौअण दिया चडियां।

सुषमा देवी, गांव व डाकघर 'भरमाड़, जिला काँगड़ा, हि.प्र.

परिवार - कुटुंब - प्रबोधन गीत

जैसे निर्मल गंगा धारा ऐसा हो परिवार हमारा
जैसे निर्मल गंगा धारा ऐसा हो परिवार हमारा
साथ रहे दादी दादा जी, सबका जीवन हो सादा जी,
कुल दीपक का हो उजियारा, ऐसा हो परिवार हमारा.....
घर अपना हो एक देवालय बन जाए जैसे सेवालय,
हो आंगन में तुलसी क्यारा, ऐसा हो परिवार हमारा.....
हर घर में हो इक इक गईया, हर बालक हो कृष्ण कन्हैया,
मात पिता की आंख का तारा, ऐसा हो परिवार हमारा.....
राम लखन से सब भाई हों, बहन बुआ भी सुखदाई हो,
बहे हृदय में अमृत धारा, ऐसा हो परिवार हमारा.....
कोई आस रहे ना बाकी, प्यार लुटाए चाचा चाची,
भईया भाभी बने सहारा, ऐसा हो परिवार हमारा.....
सपने में भी भूल करे ना, पश्चिम की हम नकल करे ना,
हमको अपना पूरब प्यारा, ऐसा हो परिवार हमारा.....
फागुन माघ बरसता सावन, अपना आंगन हो वृंदावन,
मंगलमय हर मास हमारा, ऐसा हो परिवार हमारा.....
हर सिद्ध अपना कार्यभार हो, संस्कृति के संग संस्कार हो,
देख रहा हमको जग सारा, ऐसा हो परिवार हमारा.....

बेटा बेटी एक समान !

बेटा बेटी एक समान कथनी करनी का अंतर है।
दो दो घर की बनी लाडली मुफ्त की नौकर बनती रही है।
दहलीज नहीं जो लांघ सकी क्या खुद का हक ले सकती है !
लांघा दरवाजा, बिखर गया तब घर बाहर सब, छूट गया।
बिटिया को बेटा तो कहते पर बेटे सा अधिकार नहीं।
बेटी जीवन भर जल भरती गंगा जल नहीं दे सकती है।
जिसने जन्मा जिसने पाला उन पर भी अधिकार नहीं है।
भाइयों को सब दे सकती है अपना हक भी खो सकती है।
गीला तकिया कहे कहानी बेटी रातभर जाग रही है।
उलझी जुल्फें सुलझा न पाई अपनी बातें बता न पाई।
लंबी चुनरी सर पर ओढे कब अपने आंसू पौंछ सकी है।
जीवन भर भी सेवा करके मां बाप को अग्नि दे न सकी है।
कहने को आधा आबादी आधा हिस्सा ले न सकी है।
घर परिवार समाज चलाती घर में खुद की चला न सकी है।

कल्पना वर्मा बेबी, शिमला, हि.प्र.

मधुमेह और उसका उपचार

मधुमेह को आधुनिक चिकित्सा विज्ञान द्वारा जीवन भर चलने वाला रोग माना जाता है किंतु प्राकृतिक चिकित्सा के अनुसार यह पाचन संस्थान का विकार है जिसे नियंत्रित योगाभ्यास, जीवन शैली में परिवर्तन और पयाहार के प्रयोग से शीघ्र नियंत्रण में लाया जा सकता है।

मधुमेह क्या है?

पाचन प्रक्रिया में रक्त शर्करा को नियंत्रित करने वाले रसायन (इंसुलिन) की कमी से रक्त में शर्करा की मात्रा बढ़ जाती है। इससे यह रोग होता है। इस रोग में बार-बार पसीना आना, ज्यादा भूख एवं प्यास लगना और बार-बार पेशाब करना इस रोग के लक्षण है। इससे शरीर में दुर्बलता आती है, चेहरे की कान्ति क्षीण होती है और मानसिक चिड़चिड़ापन बढ़ता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस रोग के प्रमुख योग

1. धनु या मीन राशि राशि में स्थित बुध पर सूर्य की दृष्टि हो।
2. पंचम स्थान में शनि, सूर्य एवं शुक्र हों। पंचम स्थान कोटि चक्रासन, अर्धमत्स्येन्द्रासन, वज्रासन, शलभासन, इंसुलिन का स्त्रवण स्थान भी हैं।
3. लग्न में सूर्य तथा सप्तम में मंगल हो ।

मधुमेह की चिकित्सा: मधुमेह को नियंत्रित रखने में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेष रूप से प्रभावी हैं। मधुमेह के रोगी की चिकित्सा का निर्धारण किया जाता है। इसमें योग की निम्न प्रक्रियाएं लाभदायक है, परन्तु अभ्यास क्रम का चयन रोगी की आयु व रोगी की अवस्था के अनुसार किया जाता है।

षटकर्म : कुंजल, नौलि, शखप्रक्षालन, **बंध :** उड्डियान बंध

आसन: कोटि चक्रासन, अर्धमत्स्येन्द्रासन, वज्रासन, शलभासन, पश्चिमोत्तानासन, धनुरासन, मण्डूकासन, कोणासन तथा पादहस्तासन। **प्राणायाम :** भस्त्रिका, कपातभाति, अनुलोम-विलोम, उज्जायी, नाड़ी शुद्धि, भ्रामरी एवं सूर्यनमस्कार

ध्यान : इसी प्रकार प्राकृतिक चिकित्सा की निम्नलिखित प्रक्रियाएं मधुमेह के प्रभावी नियंत्रण एवं प्रबंधन में सहायक हो सकती है :

मिट्टी चिकित्सा : पेट पर पीली लेटेराईट मिट्टी

जल चिकित्सा : पेट पर गरम ठंडा सेंक, एनिमा ठंडा, कटिस्नान, गरम ठंडा कटिस्नान पेट की लपेट रीढ़ स्नान।

मालिश चिकित्सा : शरीर की मालिश

व्यायाम चिकित्सा : प्रात:काल टहलना।

मंत्र चिकित्सा : ॐ घृणि सूर्याय नम: इस मंत्र का तुलसी की माला के साथ जाप करने पर लाभ प्राप्त होता हैं।

माला चिकित्सा: नीम की माला पहनने से मधुमेह के रोगी को लाभ होता है।

मधुमेह में लाभप्रद आहार : सोयाबीन, सेम, शलजम, खीरा, ककड़ी, लहसुन, लौकी, करेला, पालक, मैथी, बथुवा, चौलाई, आँवला, जामुन, बेल आदि।

चरक संहिता में मधुमेह में दिए जाने वाले आहारों का वर्णन किया गया है जो इस प्रकार है :

मूँग का सूप (यूष) : तिक्त द्रव्यों के शाक से पुराने चावल का भात सांठी चावल। इसी प्रकार 'सुश्रुत संहिता' में निम्नलिखित खाद्य पदार्थों का वर्णन मधुमेह के प्रयोजनार्थ किया गया है।

सांठी, जौ, अरहर, कुलथी और मूँग, सरसों के तेल में सिद्ध तिक्तक गण शाक इत्यादि।

मधुमेह के रोगी के लिए जानने योग्य आवश्यक बातें

1. मधुमेह के रोगियों के लिए भोजन में मेंथी का प्रयोग विशेष लाभकारी है। मेंथी को अंकुरित करके अथवा उसका पाउडर बनाकर एक-एक चम्मच लिया जा सकता है।
2. मधुमेह के रोगियों को गेहूँ के आटे में चना, सोयाबीन तथा मेंथी आदि मिलाकर उससे बनी रोटी खानी चाहिए। 10 किलो आटे में साढ़े सात किलो गेहूँ, डेढ़ किलो चना, 100 ग्राम सोयाबीन तथा 100 ग्राम मेंथी के मिश्रण का अनुपात रखा जाता है।
3. सोयम के पत्ते को सुखाकर उसका चूर्ण बनाकर प्रतिदिन सेवन करने से मधुमेह से निजात पाने में मदद मिलती है।
4. गुलाबचीन की छाल को रात्रि में भिगोकर रख दे तथा सुबह उसके पानी का सेवन करने से काफी फायदा होता है।

वोट चोरी का आरोप निराधार

चुनाव आयोग ने कुछ राजनीतिक दलों की मान्यता की रद्द

चुनाव आयोग ने नेशनल मीडिया सेंटर में एक प्रेस वार्ता के दौरान विपक्ष के आरोपों पर पलटवार करते हुए कहा कि वोट चोरी जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर जनता को गुमराह करने का प्रयास किया जा रहा है। विपक्ष चुनाव आयोग के कंधे पर बंदूक रखकर राजनीति कर रहा है। ऐसे झूठे आरोपों से चुनाव आयोग डरने वाला नहीं है।

भारत के संविधान के अनुसार 18 वर्ष की आयु प्राप्त करने वाले भारत के प्रत्येक नागरिक को मतदाता बनना चाहिए और मतदान भी करना चाहिए। आप सभी जानते हैं कि कानून के अनुसार प्रत्येक राजनीतिक दल का जन्म चुनाव आयोग में पंजीकरण के माध्यम से होता है। फिर चुनाव आयोग समान राजनीतिक दलों के बीच भेदभाव कैसे कर सकता है? चुनाव आयोग के लिए न तो कोई विपक्ष है और न ही कोई पक्ष। सभी समान हैं। चाहे कोई किसी भी राजनीतिक दल से संबंधित हो, चुनाव आयोग अपने संवैधानिक कर्तव्य से पीछे नहीं हटेगा।

चुनाव आयोग ने बिहार से एक विशेष गहन पुनरीक्षण की शुरुआत की है। स्ट्रक्की प्रक्रिया में सभी मतदाताओं, बूथ स्तर के अधिकारियों और सभी राजनीतिक दलों द्वारा नामित 1.6 लाख BLA ने मिलकर एक मसौदा सूची तैयार की है।

यह गंभीर चिंता का विषय है कि राजनीतिक दलों के जिला अध्यक्षों और उनकी ओर से नामित बीएलओ के ये सत्यापित दस्तावेज, प्रशंसापत्र या तो उनके अपने राज्य स्तरीय या राष्ट्रीय स्तर के नेताओं तक नहीं पहुंच रहे हैं या फिर जमीनी हकीकत को नजरअंदाज करके भ्रम फैलाने की कोशिश की जा रही है। हम साफ कर देते हैं कि चुनाव आयोग बिना किसी डर के गरीब, अमीर, बुजुर्ग, महिला, युवा समेत सभी धर्मों-वर्गों के लोगों के साथ चट्टान की तरह खड़ा था, खड़ा है और खड़ा रहेगा।

रिटर्निंग ऑफिसर की ओर से नतीजे घोषित करने के बाद भी कानून में यह प्रावधान है कि 45 दिनों की अवधि के भीतर राजनीतिक दल कोर्ट जाकर चुनाव को चुनौती देने के लिए चुनाव याचिका दायर कर सकते हैं।

मशीन-पठनीय के संबंध में 2019 में सुप्रीम कोर्ट ने भी इस विषय का गहन अध्ययन किया और पाया कि मशीन-पठनीय मतदाता सूची देने से मतदाता की निजता का उल्लंघन हो सकता है। मशीन-पठनीय मतदाता सूची प्रतिबंधित है। चुनाव आयोग का यह निर्णय सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद और 2019 का है।

निर्वाचन आयोग द्वारा दलों की मान्यता रद्द निर्वाचन आयोग (ECI) ने देश की चुनावी प्रणाली को और पारदर्शी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए 334 पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों की मान्यता रद्द कर दी है। तकनीकी रूप से कहें तो आयोग ने इन दलों को डीलिस्ट किया है। मुख्य निर्वाचन अधिकारियों द्वारा गहन जांच के बाद इन पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त दलों को कारण बताओ नोटिस जारी किए गए और प्रत्येक को अपना पक्ष रखने व व्यक्तिगत सुनवाई का अवसर दिया गया. जांच में 345 में से 334 पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त दल निर्धारित शर्तों का पालन करने में विफल पाए गए. शेष 11 पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त दलों के मामलों को पुन: सत्यापन के लिए संबंधित मुख्य निर्वाचन अधिकारियों के पास भेजा गया है।

यह कार्रवाई जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 29 के तहत की गई है, जिसके अनुसार राजनीतिक दलों को पंजीकरण के समय अपने नाम, पते और पदाधिकारियों की जानकारी देना अनिवार्य है, साथ ही किसी भी परिवर्तन की तत्काल सूचना आयोग को देनी होती है।

वर्तमान में देश में 6 राष्ट्रीय दल, 67 राज्यस्तरीय दल (क्षेत्रीय पार्टी) और 2,854 पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल (RUPPs) थे। आयोग के दिशानिर्देशों के अनुसार, यदि कोई दल लगातार 6 वर्षों तक चुनाव नहीं लड़ता, तो उसे पंजीकृत दलों की सूची से हटा दिया जाता है। इसी के तहत, जून 2025 में आयोग ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (CEOs) को 345 RUPPs की शर्तों के अनुपालन की जांच करने का निर्देश दिया था। ये 334 दल EC की शर्तों को पूरा नहीं कर रहे थे।◆◆◆

गुस्सा करना बुरी बात

गुस्सा आदमी का विवेक खो देता है। चाहे वह बूढ़ा हो, बच्चा हो, महिला हो, पुरुष हो या कोई भी। कई बार गुस्से में बहुत कुछ बुरा हो जाता है। पल भर में ही गुस्से के कारण कोई ऐसी घटना हो जाती है कि बाद में पछताना पड़ता है। बच्चों में तो गुस्से की आदत होना बहुत ही बुरी बात है। एक छोटी सी लड़की थी, उसका नाम था परी। वो बात-बात पर गुस्सा होती थी। उसके माता-पिता भाई-बहन और स्कूल में साथ पढ़ने वाले बच्चे भी बहुत परेशान थे। वह अक्षर गुस्से में सबके साथ लड़ाई झगड़ा कर बैठी और हर रोज कोई ना कोई शिकायत लेकर स्कूल में उसकी क्लास टीचर के पास या घर में माता-पिता के पास पहुंच जाता। उसकी मां उसे हमेशा समझाती रहती कि परी बिटिया, इतना गुस्सा करना अच्छी बात नहीं है, लेकिन फिर भी उसके स्वभाव में कोई बदलाव नहीं आया। एक दिन परी अपना होमवर्क करने में व्यस्त थी। उसकी टेबल पर एक सुंदर-सा फूलों से सजा पॉट रखा था। तभी उसके छोटे भाई का हाथ उस पॉट से टकराया और गिरने पर उसके टुकडे-टुकड़े हो गए। अब क्या, परी गुस्से से बौखला उठी। तभी वहां उसकी मां ने एक आईना लाकर उसके सामने रख दिया। अब गुस्से से भरी परी ने अपनी शक्ल आईने में देखी, जो कि गुस्से में उसे भी बहुत ही बुरी लग रही थी। अपना ऐसा बिगड़ा और बदसूरत चेहरा देखते ही परी का गुस्सा छू-मंतर हो गया। तब उसकी मां ने कहा, देखा परी! गुस्से में तुम्हारी शक्ल आईने में कितनी बुरी लगती है, क्योंकि आईना कभी झूठ नहीं बोलता। अब परी को पता चल गया था कि गुस्सा करना कितना बुरा होता है। तभी से उसने गुस्सा न करने का एक वादा अपने आप से किया। यदि आप भी गुस्सा मत करें तो आपका स्वभाव भी बहुत अच्छा बन जाएगा और आपके भाई बहन, मित्र भी आपको बहुत प्यार करने लगेंगे।◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. डॉ यशवंत सिंह परमार के गांव का नाम क्या था?
   1. बागथन 2. नाहन 3. सराहां 4. राजगढ
2. सत्यानंद स्टोक्स का पहला नाम क्या था,?
   1.ईवान सैमुअल स्टोक्स 2. सैमुअल मसीह 3.सत्यानंद
3. जनरल जोरावर सिंह किस राजा के सेनापति थे ?
   1 राजा हरि सिंह 2. राजा गुलाब सिंह 3. संसार चंद
4. मेहरचंद महाजन किस राजा के प्रधानमंत्री थे ?
   1.महाराजा गुलाब सिंह। 2.हरि सिंह 3. कर्ण सिंह
5. सरदार पटेल विश्वविद्यालय किस जिला में स्थित है ?
   1.कुल्लू 2.मंडी 3.शिमला 4.कांगड़ा
6. पहाड़ी गांधी बाबा कांशीराम के पैतृक गांव का नाम क्या है ?
   1.कांगड़ा 2.धर्मशाला 3.डाडसीबा 4.ऊना
7. मेजर सोमनाथ को सेना का कौन सा सम्मान प्राप्त हुआ था ?
   1.कीर्ति चक्र 2.भारत रत्न 3.विक्टोरिया क्रॉस 4. परम वीर चक्र
8. कारगिल युद्ध में यह दिल मागे मोर किसने कहा था,?
   1. सौरभ कालिया 2. कै. विक्रम बत्रा 3. खुशहाल चंद ठाकुर 4. संजय कुमार
9. हिमाचल में कबड्डी के किस खिलाड़ी को पद्मश्री सम्मान प्राप्त हुआ है?
   1.अजय ठाकुर 2. पुष्पा राणा 3. रितु नेगी 4. रेणुका सिंह
10. विभाजन विभीषिका दिवस कब मनाया जाता है?
    1. 14 अगस्त 2. 15 अगस्त 3. 26 जनवरी 4. 14 अप्रैल

उत्तर : 1. बागथन 2.ईवान सैमुअल स्टोक्स 3. राजा गुलाब सिंह 4. महाराजा हरि सिंह 5. मण्डी 6. डाडसीबा 7. परमवीर चक्र 8. कै. विक्रम बत्रा 9.अजय ठाकुर 10. 14 अगस्त

शिक्षाप्रद चुटकुले

अध्यापिका : बच्चों, बताओ झांसी की रानी कौन थीं?

बच्चा: वो सुपरवूमन थीं मैडम, जिन्होंने घोड़े पर बैठकर कहा - 'मैं अपनी झांसी नहीं दूँगी!'

अध्यापिका (हंसते हुए): बिल्कुल सही, और सीख यह है कि हमें अपने अधिकार और सम्मान की रक्षा करनी चाहिए।

◆◆◆

बच्चा: मम्मी, भगत सिंह इतने छोटे उम्र में ही जेल क्यों चले गए?

मम्मी: क्योंकि बेटा, वो खेलते-खेलते नहीं, देश बचाते-बचाते बड़े हुए।

बच्चा: वाह! मतलब पढ़ाई के साथ-साथ देशप्रेम भी ज़रूरी है।

◆◆◆

अध्यापिका: बच्चों, बताओ आज़ादी की पहली लड़ाई कब हुई थी?

बच्ची: 1857 में मैडम। **अध्यापिका:** बहुत अच्छा। **बच्ची (मुस्कुराकर):** और तब से हर भारतीय के दिल में 'देश पहले' का अलार्म बजता है।

श्रद्धांजलि

बचपन मे समिति की शाखाओं में संघ शिक्षा में दीक्षा हुई। राष्ट्र के लिए संघ कुछ अच्छा करने वाला है, ऐसा मैंने दस वर्ष की आयु में अनुभव किया। परिवार, समाज को संस्कार देने वाला संघ और समिति ही है।

घर की ईंटें घर के भीतर गिरेंगी, तो संभाली जा सकती हैं। परंतु अगर बाहर गिरेंगी तो संभाली नहीं ज सकेंगी और बाहर के लोग उठाकर ले जाएंगे। अपने भीतर की कार्य करने की क्षमता और सेवाभाव को कभी मरने मत देना।

- प्रमिला ताई जी

समर्पण और सेवा का आदर्श व्यक्तित्व

राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना 25 अक्टूबर 1936 को नागपुर में लक्ष्मीबाई केलकर, जिन्हें स्नेहपूर्वक 'मौसी जी' कहा जाता है, ने की थी। मौसीजी का मानना था कि राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की विशेष भूमिका है और उनके लिए अलग संगठन की आवश्यकता है। समिति का मूल उद्देश्य भारत माता को परमेश्वरी मानकर मातृभूमि की सेवा करना है। सेविकाओं को शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उनमें अनुशासन, संगठन-भावना, नेतृत्व क्षमता और समाजसेवा की प्रवृत्ति विकसित करना समिति का ध्येय है। शाखाओं में लाठी, योग, व्यायाम, खेल और गीतों के माध्यम से आत्मरक्षा व संगठन शक्ति का प्रशिक्षण दिया जाता है। शिक्षा, सेवा, स्वास्थ्य, महिला उत्थान और ग्राम विकास इसके प्रमुख कार्यक्षेत्र रहे हैं। इसी समिति की प्रेरणा से जीवनव्रती समाज सेविका प्रमिला ताई मेढे ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाजसेवा को समर्पित कर दिया। साधारण परिवार में जन्मी ताई ने विवाह न कर आदिवासी, वनवासी और ग्रामीण समाज के उत्थान को अपना ध्येय बनाया। उन्होंने शिक्षा प्रसार के लिए विद्यालयों व छात्रावासों की स्थापना की, स्वास्थ्य और स्वच्छता पर जनजागरण किया तथा महिलाओं को संगठित कर आत्मनिर्भर बनाया।

प्रमिला ताई का 97 वर्ष की आयु में नागपुर में निधन हुआ। उनका जीवन त्याग, सेवा और समर्पण का अनुपम उदाहरण है, जो आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

प्रमिला ताई मेढे के जाने से स्नेह का एक स्रोत चला गया है। उन्होंने कठिन हालात में पूर्वोत्तर भारत में संगठन का कार्य किया। उनका जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा है। भागवत ने यह भी बताया कि प्रमिला ताई ने मृत्यु के बाद अपने शरीर को एम्स नागपुर को दान करने की इच्छा जताई थी, जिसे समय पर पूरा कर लिया गया है।

– मोहन भागवत सरसंघचालक

प्रमिला ताई मेढे का पूरा जीवन समाज, संगठन और राष्ट्र सेवा को समर्पित रहा है। राष्ट्र सेविका समिति के माध्यम से उनके द्वारा आदिवासी समाज की शिक्षा के लिए किए गए प्रयास, महिला सशक्तिकरण और सामाजिक कार्यों में अप्रतिम योगदान हमेशा याद किया जाएगा। उनका आदर्श जीवन राष्ट्र सेविका समिति के लिए मार्गदर्शन और प्रेरणास्रोत बना रहेगा

– नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री

कार्यालय
मातृवन्दना (मासिक)
डा. हेडगेवार भवन, द्वितीय तल नाभा,
शिमला-171004, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष : 0177-2836990,
मोबाइल : 7650000990

सेवा में

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेस - 9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित।

follow us on :